सुलभ साहित्य-माला

सच्च-संगहो

सम्पादक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

—⊱⊙⊰—

प्रकाशक

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रथम संस्करण] सम्वत् १९९७ वि० [

प्रकाशक
हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
प्रयाग

मुद्रक
कृष्णस्वरूप सक्सेना
लिबर्टी प्रेस, दारागंज,
प्रयाग।

कृतज्ञता-प्रकाश

स्वर्गीय श्रीमान बडौदा-नरेश महाराज सयाजीराव गायकवाड महोदय ने बम्बई के सम्मेलन में स्वयं उपस्थित होकर जो पाँच सहस्र रुपये की सहायता सम्मेलन को प्रदान की थी, उसी सहायता से सम्मेलन इस "सुलभ-साहित्य-माला" के प्रकाशन का कार्य कर रहा है। इस "माला" में जिन सुन्दर और मनोरम ग्रन्थ पुष्पों का ग्रन्थन किया जा रहा है उनकी सुरभि से समस्त हिन्दी-संसार सुवासित हो रहा है। इस "माला" के द्वारा हिन्दी-साहित्य की जो श्रीवृद्धि हो रही है उसका मुख्य श्रेय स्वर्गीय श्रीमान् बड़ौदा-नरेश महोदय को है। उनका यह हिन्दी-प्रेम भारत के अन्य हिन्दी-प्रेमी श्रीमानों के लिए अनुकरणीय है।

निवेदक—

मन्त्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,

प्रयाग

दो शब्द

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपनी परीक्षाओ मे पाली का पाठ्य क्रम इसी वर्ष स्वीकार किया है। उसके लिये पाठ्य पुस्तको की आवश्यकता प्रतीत हुई। सुप्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु और विद्वान भदत आनद कौसल्यायन ने यह भार अपने ऊपर लिया। इसके फल स्वरूप 'सच सगहो' का सुसपादित सस्करण पाठको के हाथ में है। इसमे बौद्ध वाङमय 'त्रिपिटिक' से सर्वश्रेष्ठ और सुन्दर वचनो का सकलन है। मध्यमा के पाठ्य क्रम मे इस पुस्तक को स्थान मिला है। आशा है कि पाली के प्रेमी विद्यार्थी इससे अवश्य लाभ उठायेंगे और भविष्य मे भी कौसल्यायन जी को पाली के अन्यान्य सुन्दर ग्रथो को सुसम्पादित रूप मे लाने का अवसर देंगे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग, २० अगस्त १९४०

ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल
साहित्य मन्त्री

समर्पण

पूज्य गुरुवर के

श्री चरणों में

सूची-पत्तं

विषय

भूमिका

बुद्ध-धर्म के सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रन्थ सूत्र-पिटक, विनय-पिटक तथा अभिधर्म-पिटक में भगवान् बुद्ध और उनके शिष्यों के उपदेश सगृहीत हैं। वे सभी परम्परा से बुद्ध-वचन माने जाते हैं। सूत्र पिटक मे बातचीत के ढङ्ग पर दिये गये उपदेश हैं, विनय-पिटक में भिक्षुओं के नियम-उपनियम हैं और अभि-धर्म-पिटक में है बुद्धदर्शन अपने पारिभाषिक शब्दों में।

पालि तथा मागधी भाषा के ये ग्रन्थ अपनी अर्थ कथाओं (टीकाओं) सहित लगभग तीन महाभारत के बराबर हैं। बौद्ध जनश्रुति के अनुसार बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद की तीन सङ्गीतियों (भिक्षु-सम्मेलनों) में इस वाङ्मय का सङ्गायन हुआ और प्रथम शताब्दी में राजा वट्टगामणी के समय में सिंहल में लेख-बद्ध किया गया।

विद्वानों ने त्रिपिटक की भाषा और महाराज अशोक के शिला-लेखों की भाषा पर तुलनात्मक विचार किया है। उनमें से कुछ का कहना है कि अशोक के शिलालेखों की मागधी में प्रथमा विभक्ति में

'ए' आता है और त्रिपिटक की पालि में प्रायः 'ओ'। फिर अशोक के शिलालेखों में 'र' की जगह 'ल' का प्रयोग है। इसी प्रकार अशोक के शिलालेखों मे 'श' का प्रयोग भी है जब कि त्रिपिटक की पालि मे केवल 'स' ही है। इन कुछ बातों को लेकर कोई-कोई विद्वान कहते हैं कि मागधी भाषा और चीज है और पालि और।

इस प्रकार उनकी दृष्टि मे त्रिपिटक का बुद्ध-वचन होना सदिग्ध है। लेकिन यदि वे इस बात पर विचार करें, कि एक दो अक्षरों के प्रयोग का भेद तो पालि के सिंहल मे जाकर लिखे जाने से, वहाँ सिंहालियों की भाषा से प्रभावित हो जाने के कारण भी हो सकता है और अशोक के पूर्वीय शिलालेखों मे तथा पालि मे कोई भेद नहीं, तो उन्हें पालि को बुद्ध-वचन मानने में उतनी आपत्ति न होगी।

हमारा कहना तो केवल इतना है कि जो भाषाए इस समय उपलब्ध हैं उनमें पालि त्रिपिटक की भाषा से बढकर हमें बुद्ध के समीप ले जानेवाली दूसरी भाषा नहीं। जो ज्ञान त्रिपिटक मे उपलब्ध है उस ज्ञानसे बढकर हमें बुद्ध-ज्ञान के समीप ले जानेवाला दूसरा ज्ञान नहीं। जहाँ तक बुद्ध के व्यक्तित्व का सम्बन्ध है, उसका सब से बड़ा परिचायक त्रिपिटक ही है।

प्रश्न हो सकता है कि त्रिपिटक तो बुद्ध के ५०० वर्ष बाद लिपि-बद्ध किया गया था। इतने अर्से मे कुछ मिलावट की काफी सम्भावना है। हो सकता है, लेकिन त्रिपिटक पर किस दूसरे साहित्य को तर्जीह दे? यदि यह मान भी लिया जाय कि बुद्ध की अपनी शिक्षाओं के साथ-साथ कहीं त्रिपिटक में कुछ ऐसी शिक्षाएँ भी दृष्टिगोचर होती

है जिनकी सङ्गति बुद्ध की शिक्षाओं के साथ नहीं मिलाई जा सकती, तो भी हम बुद्ध की शिक्षाओं के लिए त्रिपिटक को छोड़ कर और किस दूसरे साहित्य की शरण लें ?

भाषा और भाव की दृष्टि से पालि-वाङ्मय हमें बुद्ध के समीपतम ले जाता है। जितना समीप हमें यह ले जाता है, उतना समीप कोई दूसरा साहित्य नहीं, और जहाँ यह नहीं ले जाता, वहाँ किसी दूसरे साहित्य की गति नहीं।

पालि-वाङ्मय के उस हिस्से का जिसे हमने ऊपर त्रिपिटक[१] या बुद्ध-वचन कहा है, विस्तार इस प्रकार है—

१—सुत्त-पिटक जो निम्नलिखित पाँच निकायों में विभक्त है— (१) दीघ निकाय, (२) मज्झिम निकाय, (३) सयुत्त निकाय (४) अगुत्तर निकाय, (५) खुद्दक निकाय।

खुद्दक निकाय में पन्द्रह ग्रन्थ हैं—(१) खुद्दक पाठ, (२) धम्म-पद, (३) उदान, (४) इत्ति वुत्तक, (५) सुत्त निपात, (६) विमान वत्थु, (७) पेत वत्थु, (८) थेरगाथा (९) थेरीगाथा, (१०) जातक,

---

१—सिंहल, बर्मा और स्याम—इन तीनों देशों के अक्षरों में त्रिपिटक उपलब्ध है। सिंहल की अपेक्षा स्याम और बर्मा में सम्पूर्ण साहित्य आसानी से मिल सकता है। बर्मा के मांडले में तो सारा का सारा त्रिपिटक कई सौ शिलालेखों पर अङ्कित है। रोमनलिपि में पालि टेक्स्ट सोसाइटी की ओर से छप चुका है। देवनागरी अक्षरों में भी कुछ अंश छपा है।

(११) निद्देस, (१२) पटिसम्भिदामग्ग, (१३) अपदान, (१४) बुद्ध-वंस, (१५) चरियापिटक।

२—विनय-पिटक, निम्न-लिखित भागों में विभक्त है—(१) महा वग्ग, (२) चुल्लवग्ग, (३) पाराजिक, (४) पाचित्तिय, (५) परिवार।

३—अभिधम्म-पिटक में निम्न-लिखित सात ग्रन्थ हैं—(१) धम्म सङ्गनी, (२) विभङ्ग, (३) धातु कथा, (४) पुग्गल पञ्ञति, (५) कथावत्थु, (६) यमक, (७) पट्ठान।

त्रिपिटक का अध्ययन करने से पता चलता है कि अन्य धार्मिक ग्रन्थों की तरह बुद्ध-वचन में भी कुछ विशिष्ट प्रश्नों का उत्तर विद्यमान है। ठीक उन्हीं और वैसे ही प्रश्नों का उत्तर नहीं, जैसे प्रश्नों का उत्तर अन्य ग्रन्थों में देने का प्रयास किया गया है। क्योंकि कुछ प्रश्नों के बारे में बुद्ध कहते हैं—"भिक्षुओ, यदि कोई कहे कि मैं तब तक भगवान् बुद्ध के उपदेश के अनुसार नहीं चलूँगा, जब तक भगवान् मुझे यह न बता दें कि संसार शाश्वत है, या अशाश्वत, सान्त है या अनन्त, जीव वही है जो शरीर है या जीव दूसरा है शरीर दूसरा, मृत्यु के बाद तथागत रहते हैं या नहीं—तो भिक्षुओ! यह बातें तो तथागत के द्वारा बिना कही ही रहेंगी और वह मनुष्य यों ही मर जायगा" (पृ० २८)

इन बेकही (=अव्याकृत) बातों के सम्बन्ध में हमें ध्यान रखना है कि (१) बुद्ध ने कुछ बातों को अव्याकृत रखा है और (२) बुद्ध ने

कुछ ही बातों को अव्याकृत रखा है। इसलिए एक तो हम जिन बातों को बुद्ध ने बेकहा (=अव्याकृत) रखा है, उनके बारे में बुद्ध-मत जानने के लिए हैरान न हों, दूसरे अपनी अपनी पसन्द की बातों, अपने पसन्द के कुछ मतों—जैसे ईश्वर और आत्मा आदि—को अव्याकृतों की गिनती में रखकर अव्याकृतों की संख्या न बढावें।

संसार को किसने बनाया? कब बनाया? आदि प्रश्नों को बुद्ध ने नजर अन्दाज किया, उनका उत्तर नहीं दिया—यह अकारण नहीं। उनका कहना था— 'भिक्षुओ, जैसे किसी आदमी को जहर में बुझा हुआ तीर लगा हो, उसके मित्र, रिश्तेदार उसे तीर निकालनेवाले वैद्य के पास ले जायँ। लेकिन वह कहे—मैं तब तक तीर न निकलवाऊँगा, जब तक यह न जान लूँ कि जिस आदमी ने मुझे तीर मारा है, वह क्षत्रिय है, ब्राह्मण है, वैश्य है या शूद्र है जब तक यह न जान लूँ कि जिस आदमी ने मुझे तीर मारा है, उसका अमुक नाम है, अमुक गोत्र है, अथवा यह कहे—मैं तब तक यह तीर न निकलवाऊँगा जब तक यह न जान लूँ कि जिस आदमी ने मुझे तीर मारा है वह बड़ा है, लम्बा है, छोटा है या मँझले कद का है, तो हे भिक्षुओ! उस आदमी को यह पता लगेगा ही नहीं और वह यूँ ही मर जायगा।" (पृ० २८)

जिस प्रश्न को बुद्ध ने उठाया और जिसका उत्तर दिया है, उसका सम्बन्ध न केवल सभी मनुष्यों से है, किन्तु सारे जीवों से है; न केवल सभी देशों से है, बल्कि तमाम विश्व से है। उसका सम्बन्ध अतीत से है, अनागत से है, वर्तमान से है।

प्राचीन और वर्तमान काल में ऐसे मनुष्य रहे हैं और हैं, जिनका मत है कि संसार में पैदा हुए हैं तो उसमें अधिक से अधिक मज़ा

उड़ाने की कोशिश होनी चाहिए। यही एक बुद्धिमानी है। इस बुद्धिमानी में और तो कोई दोष नहीं, दोष केवल इतना ही है कि अधिक से अधिक मजा उड़ाने को ही जीवन का परमार्थ बना लेनेवालों के हिस्से में आता है अधिक से अधिक दुःख। प्रत्येक मजे को वे इस आशा से दुगना करते हैं कि उन्हें दुगना मजा आयेगा। लेकिन होता क्या है? आज एक शराब का प्याला अपर्याप्त मालूम होता है, कल दूसरा, परसों तीसरा। एक दिन आता है कि वह शराब को इसलिए पीता है कि बिना पिये रह नहीं सकता। यही हाल संसार के सभी विषयों और मजों का है। थोड़े ही समय में विषयों के भोगने में तो कोई मजा नहीं रहता और न भोगने में होता है दुःख, महान् दुःख! कैसी दयनीय दशा होती है तब भोगों के पीछे अन्धे होकर भागनेवालों की!!!

कुछ लोगों का कहना है कि संसार तो मिथ्या है, है ही नहीं, रस्सी में सर्प का भान है। इस मिथ्या-भान को छोड़कर जो वास्तविक अस्तित्व है—सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म है—उस ब्रह्म का साक्षात् करना ही एक मात्र परमार्थ है। छः इन्द्रियों से जिस संसार का प्रतिक्षण अनुभव हो रहा है, उसे मिथ्या कहें तो कैसे? और इस 'मिथ्या' के पीछे किसी दूसरे सत्य को स्वीकार करें तो कैसे! किस आधार पर? श्रुति-प्रतिपादित होने के अतिरिक्त क्या और भी कोई प्रमाण है? और श्रुति की प्रामाणिकता में क्या प्रमाण है?

संसार के भोगों को ही परम परमार्थ माननेवालों को यदि हम जड़वादी, भोगवादी कहें, तो सांसारिक वस्तुओं को सर्वथा मिथ्या

माननेवालों को हम आत्मवादी या ब्रह्मवादी कह सकते हैं। बुद्ध का अपना वाद क्या है?

त्रिपिटक में ससार का वर्णन दोनों दृष्टियों से है। साधारण आदमी की दृष्टि से भी और अर्हत् या जीवन्मुक्त की दृष्टि से भी, व्यावहारिक-दृष्टि से भी और यथार्थ-दृष्टि से भी। साधारण आदमी की दृष्टि से ससार में फूल भी हैं, काँटे भी हैं, दु:ख भी है, सुख भी है, लेकिन अर्हत् की दृष्टि से ससार में काँटे ही काँटे हैं, दुःख ही दुःख है।

खुजली के रोगी को खाज खुजलाने में जो मज़ा आता है वह "न लड्डू खाने मे, न पेड़े खाने मे।" खाज का खुजलाना उसके लिए मजा है, सुख है और खाज का न खुजलाना—यों ही खाज होते रहने देना कष्ट है, दु:ख है। थोड़ी देर के लिए वह यह भूल जाता है कि स्वस्थ मनुष्य की कोई ऐसी भी अवस्था है, जिसमे न खाज होती है, न खुजलाना।

खाज से पीडित आदमी के लिए खाज होना अवाञ्छनीय है, खुजलाना वाञ्छनीय। स्वस्थ आदमी दोनो से परहेज करता है, न उसे खाज होना प्रिय है, न खुजलाना। साधारण आदमी के लिए ससार के सुख वाञ्छनीय हैं, दुःख अवाञ्छनीय, अर्हत् दोनों को एक दृष्टि से देखता है। इन्द्रियों और मन की जिन चञ्चलताओं को हम 'मजा लेना' कहते हैं, शान्त-चित्त अर्हत् के लिए वह सभी चञ्चलताएँ दुःख हैं।

त्रिपिटक में यह जो बुद्ध ने बार-बार कहा है "भिक्षुओ, दुःख आर्य-सत्य क्या है? पैदा होना दुःख है, बूढ़ा होना दुःख है, मरना दुःख है, शोक करना दुःख है, रोना पीटना दुःख है, पीड़ित होना दुःख है, परेशान होना दुःख है, इच्छाओं का पूरा न होना दुःख है, थोड़े में कहना हो तो पाँच उपादान-स्कन्ध ही दुःख हैं" (पृ० ३) सो अर्हत् की ही दृष्टि से कहा है।

तब तो बुद्ध-धर्म बिलकुल निराशावाद ही निराशावाद है? नहीं। निराशावाद कहता है—दुःख है और दुःख से छुटकारा नहीं, लेकिन बुद्ध-धर्म एक योग्य चिकित्सक की भाँति कहता है "दुःख है और दुःख से छुटकारा है।" जो धर्म किसी परमात्मा पर विश्वास के बिना, किसी परमात्मा के अवतार=पुत्र या पैगम्बर पर निर्भरता के बिना—किसी 'ईश्वरीय ग्रन्थ' को मानने की मजबूरी के बिना, किसी पण्डे पुरोहित की गुलामी के बिना सभी दुःखों के अन्त कर देने का रास्ता बताता है, उससे बढ़कर आशावादी धर्म कौन सा होगा?

हाँ तो इस दुःख-संसार का कारण क्या है? बुद्ध कहते हैं, 'वह ईश्वर भी बड़ा खराब होगा (जिसने कुछ लोगों के मत में) ऐसा दुःखमय संसार बनाया।'

बुद्ध के मत में दुःख का कारण हम स्वयं हैं, हमारी अपनी अविद्या है, हमारी अपनी तृष्णा है। 'भिक्षुओ, यह जो फिर-फिर जन्म का कारण है, यह जो लोभ तथा राग से युक्त है, यह जो जहाँ कहीं

मज़ा लेती है, यह जो तृष्णा है, जैसे काम-तृष्णा, भव-तृष्णा, विभव-तृष्णा यह तृष्णा ही दुःख के समुदय के बारे में आर्य-सत्य है।"(पृ० १४)

ऊपर कह आये हैं कि बुद्ध का जो विशेष उपदेश है, वह केवल दुःख और दुःख से मुक्ति का उपदेश है। 'दो ही चीजें भिक्षुओं, मैं सिखाता हूं—दुःख और दुःख से मुक्ति।' प्रश्न होता है, यह दुखी होनेवाला कौन है? यह दुख से मुक्त होनेवाला कौन? आत्मवादी दर्शनों से यदि यह प्रश्न पूछा जाय तो उनका तो सीधा उत्तर है, 'जीवात्मा'। लेकिन जब बुद्ध से पूछा जाता है कि 'आप कहते हैं मनुष्य दुःख भोगता है, मनुष्य मुक्त होता है, तो यह दुःख भोगनेवाला, दुःख से मुक्त होने वाला कौन है?" बुद्ध कहते हैं, "तुम्हारा यह प्रश्न ही गलत है, (न कल्लोय पञ्हो) प्रश्न यों होना चाहिए कि क्या होने से दुःख होता है और उसका उत्तर यह है कि तृष्णा होने से दुःख होता है।" यदि आप फिर यह जानना चाहें कि तृष्णा किसे होती है, तो फिर बुद्ध का वही उत्तर है कि "तुम्हारा यह प्रश्न ही गलत है कि तृष्णा किसे होती है। प्रश्न यों होना चाहिए कि क्या होने से तृष्णा होती है? और इसका उत्तर यह है कि वेदना (=इन्द्रियों और विषयों के स्पर्श से अनुभूति) होने से तृष्णा होती है।" इस प्रकार यह प्रत्ययों से उत्पत्ति का नियम (प्रतीत्यसमुत्पाद) सदा चलता रहता है। एक के होने से दूसरे की उत्पत्ति होती है, एक के निरोध से दूसरे का निरोध।

तब प्रश्न होता है कि यदि यथार्थ में कोई दुःख का भोक्ता है ही नहीं तो फिर दुःख से मुक्ति का प्रयत्न व्यर्थ है? हां, सचमुच यदि

त्रिपिटक में यह जो बुद्ध ने बार-बार कहा है "भिक्षुओ, दुःख आर्य-सत्य क्या है? पैदा होना दुःख है, बूढ़ा होना दुःख है, मरना दुःख है, शोक करना दुःख है, रोना पीटना दुःख है, पीड़ित होना दुःख है, परेशान होना दुःख है, इच्छाओं का पूरा न होना दुःख है, थोड़े में कहना हो तो पाँच उपादान-स्कन्ध ही दुःख है (पृ० ३) तो अर्हत की ही दृष्टि से कहा है।

तब तो बुद्ध-धर्म बिल्कुल निराशावाद ही निराशावाद है? नहीं। निराशावाद कहता है—दुःख है और दुःख से छुटकारा नहीं, लेकिन बुद्ध-धर्म एक योग्य चिकित्सक की भाँति कहता है "दुःख है और दुःख से छुटकारा है।" जो धर्म किसी परमात्मा पर विश्वास के बिना किसी परमात्मा के अवतार=पुत्र या पैगम्बर पर निर्भरता के बिना—किसी 'ईश्वरीय ग्रन्थ' को मानने की मजबूरी के बिना, किसी पण्डे पुरोहित की गुलामी के बिना सभी दुःखों के अन्त कर देने का रास्ता बताता है, उससे बढ़कर आशावादी धर्म कौन सा होगा?

हाँ, तो इस दुःख-संसार का कारण क्या है? बुद्ध कहते हैं, वह ईश्वर भी बड़ा क्रूर होगा (जिसने कुछ लोगों के मत से) ऐसा दुःखमय संसार बनाया।

बुद्ध के मत से दुःख का कारण हम स्वयं हैं हमारी अपनी अविद्या है, हमारी अपनी तृष्णा है। भिक्षुओ, यह जो फिर-फिर जन्म का कारण है, यह जो लोभ तथा राग से युक्त है, यह जो जहाँ कहीं

मना लेती है, यह जो तृष्णा है, जैसे काम-तृष्णा, भव-तृष्णा, विभव-तृष्णा यह तृष्णा ही दुःख के समुदय के बारे में आर्य-सत्य है।" (पृ० १४)

ऊपर कह आये हैं कि बुद्ध का जो विशेष उपदेश है, वह केवल दुःख और दुःख से मुक्ति का उपदेश है। 'दो ही चीजें भिक्षुओं, मैं सिखाता हूं—दुःख और दुःख से मुक्ति।' प्रश्न होता है, यह दुखी होनेवाला कौन है? यह दुख से मुक्त होनेवाला कौन? आत्मवादी दर्शनों से यदि यह प्रश्न पूछा जाय तो उनका तो सीधा उत्तर है, 'जीवात्मा'। लेकिन जब बुद्ध से पूछा जाता है कि 'आप कहते हैं मनुष्य दुःख भोगता है, मनुष्य मुक्त होता है, तो यह दुःख भोगनेवाला, दुःख से मुक्त होने वाला कौन है!" बुद्ध कहते हैं, "तुम्हारा यह प्रश्न ही गलत है, (न कल्लोय पञ्हो) प्रश्न यों होना चाहिए कि क्या होने से दुःख होता है और उसका उत्तर यह है कि तृष्णा होने से दुःख होता है।" यदि आप फिर यह जानना चाहें कि तृष्णा किसे होती है, तो फिर बुद्ध का वही उत्तर है कि "तुम्हारा यह प्रश्न ही गलत है कि तृष्णा किसे होती है। प्रश्न यों होना चाहिए कि क्या होने से तृष्णा होती है? और इसका उत्तर यह है कि वेदना (=इन्द्रियों और विषयों के स्पर्श से अनुभूति) होने से तृष्णा होती है।" इस प्रकार यह प्रत्ययों से उत्पत्ति का नियम (प्रतीत्यसमुत्पाद) सदा चलता रहता है। एक के होने से दूसरे की उत्पत्ति होती है, एक के निरोध से दूसरे का निरोध।

तब प्रश्न होता है कि यदि यथार्थ में कोई दुःख का भोक्ता है ही नहीं तो फिर दुःख से मुक्ति का प्रयत्न व्यर्थ है? हां, सचमुच यदि

हमें यह यथार्थ दृष्टि उपलब्ध हो जाय कि 'जीव-आत्मा' नाम की कोई वस्तु नहीं, यह केवल हमारे अहङ्कार का एक सूक्ष्म प्रतिबिम्ब है, अवशेष है और हो जाय हमारे इस अहङ्कार का सर्वथा नाश, तो फिर हमें दुःख से मुक्त होने का प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं।

क्या यह दुःख का जो ऐकान्तिक निरोध है, जिसे निर्वाण कहते हैं, जीते जी प्राप्त किया जा सकता है? हाँ, इसी 'छः फीट के शरीर में' प्राप्त किया जा सकता है। "भिक्षुओ, आदमी जीते जी निर्वाण प्राप्त करता है, जो काल से सीमित नहीं जिसके बारे में कहा जा सकता है कि आओ और स्वय देख लो, जो ऊपर उठाने-वाला है, जिसे प्रत्येक बुद्धिमान् आदमी स्वय प्रत्यक्ष कर सकता है।" (पृ० २१)

"भिक्षु, जब शान्त चित्त हो जाता है, जब (बन्धनों से) बिल्कुल मुक्त हो जाता है, तब उसको कुछ और करना बाक़ी नहीं रहता। जो कार्य वह करता है, उसमें कोई ऐसा नहीं होता जिसके लिए उसे पश्चात्ताप हो। (पृ० २२)

इस प्रकार का अर्हत्व प्राप्त भिक्षु जब शरीर छोड़ता है तब उसके पाँच स्कन्धों* का क्या होता है? जिस कारण से उसका पुनर्जन्म हुआ होता, उस (तृष्णा-अविद्या) के नष्ट होने के कारण उसका पुनर्जन्म नहीं होता। ठीक उसी तरह जिस तरह बिजली का मनका (Switch) ऊपर उठा देने से बिजली की धारा (Electric current) रुक जाती है और बल्ब बुझ जाता है, वैसे ही तृष्णा

* रूप, वेदना सज्ञा, सस्कार, विज्ञान—यही पाँच स्कन्ध हैं।

की धारा का निरोध होने से यह जो जन्म-मरण-रूपी दिया जलता रहता है, वह बुझ जाता है। हम बिजली के उदाहरण में यह नहीं पूछते कि जो रोशनी थी, वह क्या हुई? क्योंकि हम जानते हैं कि रोशनी की उत्पत्ति का कारण तो बिजली की धारा थी, वह बन्द हो गई तो अब रोशनी कैसे उत्पन्न हो, उसी प्रकार जब अविद्या-तृष्णा की धारा बन्द हो गई, तो फिर जन्म-मरण का दीपक कैसे जले? उसका निर्वाण तो अवश्यभावी है।

तो बौद्ध पुनर्जन्म को मानते हैं? हाँ, अवश्य, लेकिन व्यवहार की दृष्टि से। "भिक्षुओ जैसे गो से दूध, दूध से दही, दही से मक्खन, मक्खन से घी, घी से घीमंड होता है। जिस समय दूध होता है, उस समय न उसे दही कहते हैं न मक्खन, न घी न घी का मांडा। इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस समय मेरा भूतकाल का जन्म था, उस समय मेरा भूतकाल का जन्म ही सत्य था, यह वर्तमान और भविष्य का जन्म असत्य था। जब मेरा भविष्य काल का जन्म होगा, उस समय मेरा भविष्य काल का जन्म ही सत्य होगा, यह वर्तमान और भूतकाल का जन्म असत्य होगा।

'भिक्षुओ, यह लौकिक सज्ञा है। लौकिक निरुक्तियाँ हैं, लौकिक व्यवहार हैं, लौकिक प्रज्ञप्तियाँ हैं—इनका तथागत व्यवहार करते हैं, लेकिन इनमें फँसते नहीं।" (पृ० ३७)

'जब आत्मा ही नहीं तब पुनर्जन्म किसका?"—यह एक प्रश्न है जो प्रायः सभी पूछते हैं। इसका आंशिक उत्तर ऊपर दिया जा चुका है। अधिक स्पष्टता और सरलता से कहने के लिए, यों कहा जा

सकता है कि जो कार्य अबौद्ध-दर्शन आत्मा से लेते हैं, वह सारा कार्य बौद्ध-दर्शन मे मन=चित्त=विज्ञान से ही ले लिया जाता है। आत्मा को जब शाश्वत, ध्रुव, अविपरिणामी, मान लिया तो फिर उसके संस्कारों का वाहक होने की संगति ठीक नहीं बैठती लेकिन मन=चित्त=विज्ञान तो परिवर्तनशील है, वह अच्छे कर्मों से अच्छा और बुरे कर्मों से बुरा हो सकता है। धम्मपद की पहली गाथा है —

मनो पुब्बङ्गमा धम्मा, मनो सेट्ठा मनोमया
मनसा चे पदुट्ठेन भासति वा करोति वा
ततो न दुःखमन्वेति चक्कं व वहतो पदं ।

सभी अवस्थाओं का पूर्वगामी मन है, उनमे मन ही मुख्य है, वे मनोमय हैं। जब आदमी मलिन मन से बोलता वा कार्य करता है तब दुःख उसके पीछे-पीछे ऐसे हो लेता है जैसे (गाडी के) पहिए (बैल के) पैरों के पीछे।

तो भगवान् बुद्ध की शिक्षा के अनुसार इस प्रति-क्षण अनुभव होने वाले दुःख का अन्त किस प्रकार किया जा सकता है? यही विचारवान, सदाचारी बनकर और चित्त की एकाग्रता सम्पादन करके।

धम्मपद की गाथा है.—

सब्ब पापस्स अकरणं ।
कुसलस्स उपसम्पदा ॥
सचित्त परियोदपनं ।
एतं बुद्धानसासनं ॥

अशुभ कर्मों का न करना, शुभ कर्मों का करना और चित्त को काबू में रखना—यही बुद्धों की शिक्षा है।

भिक्षु जिस समय दीक्षा ग्रहण करता है, अपने आचार्य से कहता है कि सब दुःखों का जो निर्वाण अथवा ऐकान्तिक निरोध है, उसकी प्राप्ति के लिए ये काषाय वस्त्र देकर, मुझे प्रव्रजित कर दें।

निर्वाण या मोक्ष मनुष्य के बाहर की कोई ऐसी चीज नहीं है जिसके पीछे भागकर वह उसे प्राप्त करता हो। मनुष्य जिस प्रकार स्वयं स्वस्थ होता है, स्वास्थ्य को प्राप्त नहीं करता उसी प्रकार मनुष्य निर्वृत्त होता है, निर्वाण को प्राप्त नहीं करता।

और यह निर्वाण भिक्षु ही प्राप्त कर सके—ऐसा नियम नहीं है. कोई भी हो स्त्री हो या पुरुष, गृहस्थ हो या प्रव्रजित—जिसका राग शान्त हो गया हो जिसका द्वेष शान्त हो जिसका मोह शान्त हो गया हो—वह निर्वाण-प्राप्त है।

× × ×

यह 'सच्च संगहो' नाम से त्रिपिटक में से जो छोटा सा संकलन किया गया है, इस संकलन का श्रेय है हमारे वयोवृद्ध, ज्ञान-वृद्ध, पूज्य महास्थविर ञानातिलोक को। आप जर्मन-देशीय हैं और लगभग पिछले ४० वर्ष से सिंहल (लङ्का) में हैं। इस समय आप वहाँ एक द्वीप-आश्रम (Island Hermitage) में, सिंहल के दक्षिणी हिस्से में रहते हैं। एक दो वर्ष आप जापान में प्रोफेसर रहे और लड़ाई के दिनों में काफी दिन अंग्रेजी सरकार के जेल-खाने में। आज कल फिर

आप नजरबन्द है। जहाँ कहीं पालि के पाण्डित्य की चर्चा होती है, आप का नाम अति श्रद्धा से लिया जाता है।

कुछ वर्ष हुए आपने पालि त्रिपिटक के उद्धरणों का यह सङ्कलन जो कि बाद में जर्मन और अंग्रेजी में अनूदित हो कर छपा किया था। मुझे यह सङ्कलन बहुत जचा, क्योंकि यह बौद्ध धर्म के परिचितों और अपरिचितों दोनों के लिए समान रूप से काम की चीज है। इस में त्रिपिटक के उद्धरणों को इस तरतीब से सजाया गया है कि कोई एक बात दो बार नहीं आती और मिलाकर एक क्रम-बद्ध शास्त्र का रूप धारण कर लेता है।

मेरी अपनी राय है कि बुद्ध-धर्म की सारी रूप-रेखा का समावेश इस छोटे से सङ्कलन में हो जाता है।

कई वर्ष हुए, मैंने इस सङ्कलन के अंग्रेजी रूपान्तर को पढ़ा। तभी मेरी इच्छा हुई, इसे हिन्दी में छपा देखने की। किसी न किसी को इसे हिन्दी रूपान्तर देना ही चाहिए सोच मैंने पहले उन सब उद्धरणों को मूल ग्रन्थों से नागरी अक्षरों में लिखा, जिनका महा स्थविर ञानातिलोक ने जर्मन और अंग्रेजी में अनुवाद किया था। फिर मूल पालि से उनका हिन्दी अनुवाद किया। जर्मन से मैं अनुवाद कर न सकता था, और ऐसे संग्रह का जिसका मूल पालि में हो अंग्रेजी से अनुवाद करते लज्जा आती थी। हमारे अपने देश की भाषा हो पालि, और हम उसका हिन्दी रूपान्तर देखें अंग्रेजी के माध्यम द्वारा!

वह अनुवाद 'बुद्ध-वचन' नाम से, महाबोधि पुस्तक भण्डार, सारनाथ से प्रकाशित होकर अनेकों के सन्तोष का कारण हुआ।

सम्वत् १९९७ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपनी प्रथमा, मध्यमा तथा साहित्यरत्न की परीक्षाओं में पालि को स्थान दे पालि-वाङ-मय के प्रेमियों को अनुगृहीत किया। मध्यमा की पाठ्य पुस्तकों में "सच्च संगहो" को स्थान मिला, और अब साहित्य-सम्मेलन के प्रकाशन विभाग द्वारा ही यह संग्रह प्रकाशित हो रहा है।

दारागंज, इलाहाबाद के लिबर्टी प्रेस को इस पुस्तक को शुद्ध शुद्ध छापने में विशेष परिश्रम करना पड़ा। एक दो अक्षर नए ढलवाने पड़े। असुविधा सहकर भी एक बार हाथ में लिए काम को बिना पूरा किए न छोड़ने के लिए उसे बधाई। व्यक्तिगत रूप से लेखक खास तौर पर आभारी है।

पालि के परीक्षार्थियों के लिए यह पुस्तक अधिक दुरूह नहीं है, यदि किन्हीं विद्यार्थियों को कुछ कठिनाई हो, तो उनके लिए बुद्ध-वचन, —सच्च-संगहो का हिन्दी रूपान्तर—उपयोगी होगा, क्योंकि उसके अन्त में कठिन पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या भी कर दी गई है।

मूल गन्ध कुटी विहार
सारनाथ
श्रावण पूर्णिमा — आनन्द कौसल्यायन

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स

सच्च संगहो

—:००:—

१ तथागतेन भिक्खवे अरहता सम्मासम्बुद्धेन वाराणसिय इसिपतने मिगदाये अनुत्तर धम्मचक्क पवत्तित, अप्पतिवत्तिय समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मि, यदिद चतुन्न अरियसच्चानं आचिक्खना देसना पञ्ञपना पट्ठपना विवरणा विभजना उत्तानिकम्म। कतमेस चतुन्न ?

दुक्खस्स अरियसच्चस्स, दुक्खसमुदयस्स अरियसच्चस्स, दुक्खनिरोधस्स अरियसच्चस्स, दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय अरियसच्चस्स ॥

२ याव कीवञ्च मे भिक्खवे इमेसु चतुसु अरियसच्चेसु एव तिपरिवट्ट द्वादसाकारं यथाभूत ञानदस्सन न सुविसुद्धं

---

१ मज्झिम निकाय, सच्चविभंग सुत्त
२ महावग्ग (धर्मचक्रप्रवर्तन)

अहोसि, नेव तावाहं भिक्खवे "सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो" पच्चञ्ञासिं। यतो च खो मे भिक्खवे इमेसु चतुसु अरियसच्चेसु एवं तिपरिवट्टं द्वादसाकारं यथाभूतं ञानदस्सनं सुविसुद्धं अहोसि, अथाहं भिक्खवे "सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो" पच्चञ्ञासिं ॥

१ अधिगतो खो मे अयं धम्मो गम्भीरो दुद्दसो दुरनुबोधो सन्तो पणीतो अतक्कावचरो निपुणो पण्डितवेदनीयो ॥

आलयरामा खो पनायं पजा, आलयरता आलयसम्मुदिता। आलयरामाय खो पन पजाय आलयरताय आलयसम्मुदिताय दुद्दसं इदं ठानं, यदिदं इदप्पच्चयता पटिच्चसमुप्पादो। इदम्पि खो ठानं सुदुद्दसं, यदिदं सब्बसङ्खारसमथो सब्बूपधिपटिनिस्सग्गो तण्हक्खयो विरागो निरोधो निब्बानन्ति ॥

सन्ति सत्ता अप्परजक्खजातिका, अस्सवणता धम्मस्स परिहायन्ति, भविस्सन्ति धम्मस्स अञ्ञातारो ॥

---

१ महावग्गो (ब्रह्मयाचन कथा)

दुक्ख अरियसच्चं

कतमञ्च भिक्खवे दुक्ख अरियसच्च? जातिपि दुक्खा, जरापि दुक्खा, मरणम्पि दुक्ख, सोक-परिदेव दुक्खदोमनस्सु-पायासापि दुक्खा, अप्पियेहि सम्पयोगो दुक्खो, पियेहि विप्पयोगो दुक्खो, यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्ख, सङ्खित्तेन पञ्चुपादानक्खन्धापि दुक्खा ॥

कतमा च भिक्खवे जाति? या तेस तेस सत्तान तम्हि तम्हि सत्तनिकाये जाति सञ्जाति ओक्कन्ति अभिनिब्बत्ति, खन्धान पातुभावो आयतनान पटिलाभो—अय वुच्चति भिक्खवे जाति ॥

कतमा च भिक्खवे जरा? या तेस तेस सत्तान तम्हि तम्हि सत्तनिकाये जरा जीरणता खण्डिच्च पालिच्च वलित्तचता, आयुनो सहानि. इन्द्रियान परिपाको—अय वुच्चति भिक्खवे जरा ॥

कतमञ्च भिक्खवे मरण? य तेस तेस सत्तान तम्हा तम्हा सत्तनिकाया चुति चवनता भेदो अन्तरधानं मच्चु मरण कालकिरिया. खन्धान भेदो. कलेवरस्स निक्खेपो — इद वुच्चति भिक्खवे मरण ॥

---

१ दीघ निकाय (महासति पट्ठान सुत्त)

कतमो च भिक्खवे सोको ? यो खो भिक्खवे अञ्ञतरञ्ञतरेन व्यसनेन समन्नागतस्स अञ्ञतरञ्ञतरेन दुक्खधम्मेन फुट्ठस्स सोको सोचना सोचितत्त अन्तो सोको अन्तो परिसोको — अय वुच्चति भिक्खवे सोको ॥

कतमो च भिक्खवे परिदेवो ? यो खो भिक्खवे अञ्ञतरेन अञ्ञतरेन व्यसनेन समन्नागतस्स अञ्ञतरेनञ्ञतरेन दुक्खधम्मेन फुट्ठस्स आदेवो परिदेवो आदेवना परिदेवना आदेवितत्त परिदेवितत्त — अय वुच्चति भिक्खवे परिदेवो ॥

कतमञ्च भिक्खवे दुक्ख ? य खो भिक्खवे कायिक दुक्ख कायिक असात, कायसम्फस्सज दुक्ख, असात वेदयित — इद वुच्चति भिक्खवे दुक्ख ।

कतमञ्च भिक्खवे दोमनस्स ? य खो भिक्खवे चेतसिक दुक्खं चेतसिक असात, मनोसम्फस्सज दुक्ख, असात वेदयित — इद वुच्चति भिक्खवे दोमनस्स ॥

कतमो च भिक्खवे उपायासो ? यो खो भिक्खवे अञ्ञतरञ्ञतरेन व्यसनेन समन्नागतस्स अञ्ञतरञ्ञतरेन दुक्खधम्मेन फुट्ठस्स आयासो उपायासो आयासितत्त उपायासितत्तं—अयं वुच्चति भिक्खवे उपायासो ॥

कतमो च भिक्खवे अप्पियेहि सम्पयोगो दुक्खो ? इध यस्स ते होन्ति अनिट्ठा अकन्ता अमनापा रूपा सद्दा गन्धा रसा फोट्ठब्बा धम्मा, ये वा पनस्स ते होन्ति अनत्थकामा अहित-

कामा अफासुकामा अयोगक्खेमकामा ये तेहि सद्धिं सङ्गति समागमो समोधानं मिस्सीभावो, अय वुच्चति भिक्खवे अप्पियेहि सम्पयोगो दुक्खो ॥

कतमो च भिक्खवे पियेहि विप्पयोगो दुक्खो ? इधय स्स त होन्ति इट्ठा, कन्ता मनापा रूपा सद्दा गन्धा रसा फोट्ठब्बा धम्मा, ये वा पनस्स ते होन्ति अत्थकामा हितकामा फासुकामा योगक्खेमकामा माता वा पिता वा भगिनि व कनिट्ठा वा मित्ता वा अमच्चा वा ञातिसालोहिता वा, या तेहि सद्धिं असङ्गति, असमागमो, असमोधान अमिस्सीभावो, अय वुच्चति भिक्खवे पियेहि विप्पयोगो दुक्खो ॥

कतमञ्च भिक्खवे यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्ख ? जाति-धम्मान भिक्खवे सत्तान एव इच्छा उप्पज्जति —"अहो वत मय न जातिधम्मा अस्साम, न च वत नो जाति आगच्छेय्या" ति न खो पनेत इच्छाय पत्तब्ब । इदम्पि यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्ख । जराधम्मान भिक्खवे सत्तान व्याधिधम्मान मरण धम्मान सोक-परिदेव-दुक्ख-दोमनस्सूपायासधम्मान भिक्खवे सत्तानं एव इच्छा उप्पज्जति "अहो वत मयं न सोक-परिदेव-दुक्ख-दोमनस्सूपायास-धम्मा अस्साम. न च वत नो सोक-परिदेव-दुक्ख-दोमनस्सूपायासा आगच्छे" य्युन्ति न खो पनेतं इच्छाय पत्तब्बं इदम्पि यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्ख ॥

कतमे च भिक्खवे सखित्तेन पंचुपादानक्खन्धा दुक्खा ? सेय्यथीदं, रूपुपादानक्खन्धो, वेदनूपादानक्खन्धो सञ्ञुपादान

क्खन्धो सङ्खारुपादानक्खन्धो विञ्ञाणुपादानक्खन्धो ॥

१ य किञ्चि भिक्खवे रूप अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अज्झत्तं वा वहिद्धा वा, ओलारिक वा सुखुम वा, हीन वा पणीत वा, य दूरे सन्तिके वा, सव्व त रूप 'रूपुपादानक्खन्धो' त्वेव सङ्ख गच्छति तथा सव्वा वेदना वेदनुपादानक्खन्धो' त्वेव सङ्ख गच्छति, तथा सव्वा सञ्ञा 'सिञ्ञूपादानक्खन्धो' त्वेव सङ्ख गच्छति तथा सव्वे सङ्खारा 'सङ्खारुपादानक्खन्धो, त्वेव सङ्ख गच्छति, तथा सव्व विञ्ञान 'विञ्ञानुपादानक्खन्धो त्वेव सङ्ख गच्छति ॥

२ कतमो च भिक्खवे रूपुपादानक्खन्धो ? चत्तारि च महाभूतानि चतुन्न च महाभूतान उपादाय रूप ॥

कतमे च भिक्खवे चत्तारो महाभूता ? पठवीधातु आपोधातु तेजोधातु वायोधातु ॥

कतमा च भिक्खवे पठवीधातु? पठवीधातु सिया अज्झत्तिका सिया वाहिरा। कतमा च भिक्खवे अज्झत्तिका पठवीधातु ? य अज्झत्त पच्चत्त कक्खल खरिगत उपादिन्न, सेय्यथिद कसा लोमा नखा दन्ता तचो मस नहारू अट्ठी अट्ठिमिञ्जा वक्क हदय यकन किलोमक पिहक पप्फास अन्तं अन्तगुणं उदरिय करीस, य वा पनञ्ञम्पि किञ्चि अज्झत्त पच्चत्त कक्खल खरिगत उपादिन्न — अय वुच्चति भिक्खवे अज्झत्तिका

१ मज्झिमनिकाय (महाहत्थिपदोपम सुत्त)
२ मज्झिम निकाय (महाहत्थिपदोपम सुत्त)

पठवीधातु या चेव खो पन अज्झत्तिका पठवीधातु, या च वाहिरा पठवीधातु पठवीधातुरेवेसा ॥

कतमा च भिक्खवे आपोधातु ? आपो धातु सिया अज्झत्तिका सिया वाहिरा। कतमा च भिक्खवे अज्झत्तिका आपो धातु ? य अज्झत्त पच्चत्त आपो आपोगतं उपादिन्न सेय्यथीद पित्त सेम्ह पुब्बो लोहित सेदो मेदो अस्सु वसा खेलो सिङ्घाणिका लसिका मुत्त, य वा पनञ्ञम्पि किञ्चि अज्झत्त पच्चत्त आपो आपोगत उपादिन्नं—अयं वुच्चति भिक्खवे अज्झत्तिका आपोधातु · · या चेव खो पन अज्झत्तिका आपोधातु, या च वाहिरा आपोधातु आपोधातुरेवेसा ॥

कतमा च भिक्खवे तेजोधातु ? तेजोधातु सिया अज्झत्तिका सिया वाहिरा। कतमा च भिक्खवे अज्झत्तिका तेजोधातु ? य अज्झत्तं पच्चत्तं तेजो तेजोगत उपादिन्न, सेय्यथीद येन च सन्तप्पति, येन च जिरीयति, येन च परिडय्हति, येन च असित-पीत-खायित-सायित सम्मा परिणाम गच्छति, य वा पनञ्ञम्पि किञ्चि अज्झत्त पच्चत्त तेजो तेजोगत उपादिन्नं अय वुच्चति भिक्खवे अज्झत्तिका तेजोधातु। या चेव खो पन अज्झत्तिका तेजो धातु, या च वाहिरा तेजोधातुतेजोधातुरेवेसा ॥

कतमा च भिक्खवे वायोधातु ? वायोधातु सिया अज्झत्तिका सिया वाहिरा। कतमा च भिक्खवे अज्झत्तिका वायो धातु ? य अज्झत्त पच्चत्त वायो वायोगत उपादिन्न सेय्य-

थीद उद्दङ्गमा वाता, अधोगमा वाता कुच्छिमया वाता कोट्ठसया वाता, अङ्गमङ्गानुसारिनो वाता अस्सासो पस्सासो इतिवा, य वा पनञ्ञम्पि किञ्चि अज्झत्त पच्चत्त वायो वायो गत उपादिन्न —अय वुच्चति भिक्खवे अज्झत्तिका वायोधातु •• या चेव खो पन अज्झत्तिका वायोधातु, या वाहिरा वायुधातु वायोरेवेसा ॥

१ सेय्यथापि भिक्खवे कट्ठञ्च पटिच्च वल्लिञ्च पटिच्च तिणञ्च पटिच्च मत्तिकञ्च पटिच्च आकासो परिवारितो "अगार" न्तेव सङ्ख गच्छति एवमेव खो भिक्खवे अट्ठिञ्च पटिच्च नहारुञ्च पटिच्च मसञ्च पटिच्च चम्मञ्च पटिच्च आकासो परिवारितो "रूप" न्त्वेव सङ्ख गच्छति ॥

अज्झत्तिकञ्चेव भिक्खवे चक्खु अपरिभिन्न होति, वाहिरा च रूपा न आपाथ आगच्छन्ति,नो च तज्जो समन्नाहारो होति, नेव ताव तज्जस्स विञ्ञाणभागस्स पातुभावो होति। अज्झत्तिकञ्चेव भिक्खवे चक्खु अपरिभिन्न होति, वाहिरा च रूपा आपाथ आगच्छन्ति नो च तज्जो समन्नाहारो होति, नेव ताव तज्जस्स विञ्ञाणभागस्स पातुभावो होति ॥

यतो च खो भिक्खवे अज्झत्तिकञ्चेव चक्खु अपरिभिन्न होति, वाहिरा च रूपा आपाथ आगच्छन्ति तज्जो च समन्नाहारो होति, एव तज्जस्स विञ्ञाणभागस्स पातुभावो होति ॥

---

१ मज्झिम निकाय (महाहत्थिपदोपम सुत्त)

तस्मा पटिच्च समुप्पन्नं विञ्ञाणं अञ्ञत्र पच्चया नत्थि विञ्ञाणस्स सम्भवोति वदामि ॥

यञ्ञदेव भिक्खवे पच्चय पटिच्च उप्पज्जति विञ्ञाणं तेन तेनेव सङ्ख्यं गच्छति ।

चक्खुञ्च पटिच्च रूपे च उप्पज्जति विञ्ञाणं चक्खु-विञ्ञाणं' त्वेव सङ्ख्यं गच्छति। सोतञ्च पटिच्च सद्दे च उप्प-ज्जति विञ्ञाणं, सोतविञ्ञाणं' त्वेव सङ्ख्यं गच्छति। घाणञ्च पटिच्च गन्धे च उप्पज्जति विञ्ञाणं "घाणविञ्ञाणन्त्वेव' सङ्ख्यं गच्छति। कायञ्च पटिच्च फोट्ठब्बे च उप्पज्जति विञ्ञाणं "कायविञ्ञाणं" त्वेव सङ्ख्यं गच्छति। मनञ्च पटिच्च धम्मे च उप्पज्जति विञ्ञाणं मनो विञ्ञाणं" त्वेव सङ्ख्यं गच्छति ॥

१ य तथाभूतस्स रूप, त रूपुपादानक्खन्धे सङ्गहं गच्छति या तथाभूतस्स वेदना सा वेदनूपादानक्खन्धे सङ्गहं गच्छति, या तथाभूतस्स सञ्ञा सा सञ्ञुपादानक्खन्धे सङ्गहं गच्छति, ये तथाभूतस्स सङ्खारा ते सङ्खारुपादानक्खन्धे सङ्गहं गच्छन्ति, या तथाभूतस्स विञ्ञाणं, सा विञ्ञाणुपादानक्खन्धे सङ्गहं गच्छति ॥

यो भिक्खवे एव वदेय्य, अहं अञ्ञत्र रूपा अञ्ञत्र वेदनाय अञ्ञत्र सञ्ञाय अञ्ञत्र सङ्खारेहि विञ्ञाणस्स आगतिं, गतिं वा चुतिं वा उपपत्तिं वा वुड्ढिं विरूळ्हिं वा वेपुल्लं वा पञ्ञापेस्सामीति नेतं ठानं विज्जति ॥

---

१ मज्झिम निकाय (महाहत्थिपदोपम सुत्त)

१ सब्बे सङ्खारा अनिच्चा, सब्बेसङ्खारा दुक्खा, सब्बे धम्मा अनत्ता, रूपं अनिच्चं, वेदना अनिच्चा, सञ्ञा अनिच्चा, सङ्खारा अनिच्चा, विञ्ञाणं अनिच्चं। यदनिच्चं तं दुक्खं, यं दुक्खं तदनत्ता, यदनत्ता तं नेतं मम, नेसोहमस्मि, न मे सो अत्ता' ति ॥

२ तस्मातिह भिक्खवे 'यं किञ्चि रूपं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अज्झत्तं वा बहिद्धा वा, ओलारिकं वा सुखुमं वा हीनं वा पणीतं वा, यं दूरे सन्तिके वा सब्बं रूपं नेतं मम, नेसोहमस्मि, न मे सो अत्ता "ति एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय दट्ठब्बं। या काचि वेदना · या काचि सञ्ञा · ये केचि सङ्खारा यं किञ्चि विञ्ञाणं अतीतानागत पच्चुप्पन्नं, अज्झत्तं वा, बहिद्धा वा, ओलारिकं वा, सुखुमं वा, हीनं वा पणीतं वा, यं दूरे सन्तिके वा, सब्बं विञ्ञाणं 'नेतं मम, नेसो हमस्मि, न मे सो अत्ता" ति एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय दट्ठब्बं ॥

३ "सेय्यथापि भिक्खवे! अयं गङ्गा नदी महन्तं फेणपिण्डं आवहेय्य। तमेनं चक्खुमा पुरिसो पस्सेय्य निज्झायेय्य योनिसो उपपरिक्खेय्य, तस्स तं पस्सतो निज्झायतो योनिसो उपपरिक्खतो रित्तकञ्ञेव खायेय्य तुच्छकञ्ञेव खायेय्य असारकञ्ञेव खायेय्य किं हि सिया भिक्खवे फेणपिण्डस्स सारो।

---

१ संयुत्त निकाय २१ २
२ मज्झिम निकाय (महाहत्थिपदोपम सुत्त)
३ संयुत्त निकाय २१ १

एवमेव खो भिक्खवे यंकिञ्चि रूप अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अज्झत्त वा बहिद्धा वा ओलारिकं वा सुखुम वा हीनं वा पणीतं वा य दूरे सन्तिके वा तं भिक्खु पस्सति निज्झायति योनिसो उपपरिक्खति तस्स त पस्सतो निज्झायतो योनिसो उपपरिक्खतो रित्तकञ्ञेव खायति तुच्छकञ्ञेव खायति असारकञ्ञेव खायति. कि हि सिया भिक्खवे रूपे सारो।

१ को नु हासो किमानन्दो निच्च पज्जलिते सति।

२ न तुम्हे पस्सित्थ मनुस्सेसु इत्थिं वा पुरिस वा आसीतिक वा नावुतिक वा वस्ससतिकं वा जातिया, जिण्ण गोपाणसीवङ्क भोग्ग दण्डपरायन पवेधमानं गच्छन्त आतुर गतयोब्बन खण्डदन्त पलितकेस विलून खलितसिरो वलित तिलकाहतगत्तन्ति? न च तुम्हाक एतदहोसि "अहम्पि खोम्हि जराधम्मो जर अनतीतो" ति?

न तुम्हे पस्सित्थ मनुस्सेसु इत्थि वा पुरिस वा आबाधिक दुक्खित बालहगिलान सके मुत्तकरीसे पलिपन्न सेमान अञ्ञेहि च वुट्ठापियमान अञ्ञेहि संवेसियमानन्ति? न च तुम्हाक एतदहोसि 'अहम्पि खोम्हि व्याधिधम्मो, व्याधि अनतीतो" ति?

न तुम्हे पस्सित्थ मनुस्सेसु इत्थि वा पुरिसं वा एकाहमत वा द्वीहमतं वा तीहमतं वा उद्धुमातक विनीलक विपुब्बक-

---

१ धम्मपद

२ अगुत्तर निकाय

जातन्ति? न च तुम्हाक एतदहोसि "अहम्पि खोम्हि मरण धम्मो, मरणं अनतीतो" ति?

१ अनमतग्गोय भिक्खवे ससारो, पुब्बा कोटि न पञ्ञायति अविज्जानीवरणान सत्तान तण्हासयोजनान सन्धावत ससरत।

त किम्मञ्ञथ भिक्खवे? कतमन्नु खो वहुतर य वा वो इमिना दीघेन अद्धुना सन्धावता सन्सरत अमनापसम्पयोगा मनापविप्पयोगा कन्दन्तान रोदन्तान अस्सुपस्सन्द पग्घरित, एतदेव वहुतर य वा चतुसु महासमुद्देसु उदकन्ति?

दीघरत्त वो भिक्खवे मातुमरण पच्चनुभूत, पितुमरण पच्चनुभूत, पुत्तमरण पच्चनुभूत, धीतुमरणं पच्चनुभूत, जातिब्यसन पच्चनुभूत. भोगव्यसन पच्चनुभूत, रोगव्यसन पच्चनुभूत, तेस वो मातुमरण पच्चनुभोन्तान, पितुमरण पच्चनुभोन्तान, पुत्तमरणं पच्चनुभोन्तान, धीतुमरणं पच्चनुभोन्तान, जाति-व्यसन पच्चनुभोन्तान, भोगव्यसन पच्चनुभोन्तान, रोगव्यसन पच्चनुभोन्तान, अमनापसम्पयोगा मनापविप्पयोगा कन्दन्तान रोदन्तान अस्सुपस्सन्द पग्घरित, एतदेव वहुतर न त्वेव चतुसु महासमुद्देसु उदक॥

२ त किम्मञ्ञथ भिक्खवे? कतमन्नुखो वहुतर य वा वो इमिना दीघेन अद्धुना सन्धावत सन्सरत सीसच्छिन्नान लोहित

---

१ सयुत्त निकाय १४.

२ संयुत्त निकाय १४.२

पस्सन्द पग्घरितं, एतदेव बहुतरं य वा चतुसु महासमुद्देसु उदकन्ति ?

दीघरत्तं वो भिक्खवे "चोरा गाम घातका" ति गहेत्वा सीसच्छिन्नान लोहितं पस्सन्दं पग्घरितं, एतदेव बहुतरं नत्वेव चतुसु महासमुद्देसु उदक। दीघरत्त वो भिक्खवे "चोरा परिपन्थका" ति गहेत्वा . ....“चोरा पारदारिका” ति गहेत्वा सीसच्छिन्नान लोहितं पस्सन्दं पग्घरितं, एतदेव बहुतर न त्वेव चतुसु महासमुद्देसु उदक ॥

त किस्स हेतु ? अनमतग्गोऽय भिक्खवे ससारो, पुब्बा कोटि न पञ्ञायति अविज्जा नीवरणान सत्तान तण्हासंयोजनान सन्धावत सन्सरत ॥

एव दीघरत्तं खो भिक्खवे दुक्ख पच्चनुभूत. तिब्ब पच्चनुभूत व्यसन पच्चनुभूतं, कटसि वड्ढिता, यावञ्चिद भिक्खवे अलमेव सब्बसङ्खारेसु निब्बिन्दितुं अल विरज्जितु अल विमुच्चितुन्ति ॥

———

दुक्ख-समुदयं अरियसच्च

१ कतमञ्च भिक्खवे दुक्ख-समुदय अरियसच ? या य तण्हा पोनोभविका नन्दिरागसहगता तत्र तत्राभिनन्दिनी, सेय्यथीद् कामतण्हा, भवतण्हा, विभवतण्हा ॥

२ सा खो पनेस भिक्खवे तण्हा कत्थ उप्पज्जमाना उप्पज्जति, कत्थ निविसमाना निविसति ?

य लोके पियरूप सातरूप एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, एत्थ निविसमाना निविसति।

किञ्च लोके पियरूप सातरूप ?

चक्खु लोके पियरूप सातरूप एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उपज्जति, एत्थ निविसमाना निविसति

सोत लोके · · निविसति।

घाण लोके निविसति।

जिह्वा लोके · निविसति।

काय लोके निविसति।

मनो लोके · निविसति।

---

१ मज्झिम निकाय (महाहत्थिपदोपम सुत्त)

२ दीघ निकाय (महासतिपट्ठान सुत्त)

रूप लोके पियरूप सातरूप एत्थेसा तण्हा उपज्जमाना उप-
ज्जति, एत्थेसा तण्हा निविसमाना निविसति ?

सद्दो लोके ··· ·· निविसति।

गन्धो लोके ·· निविसति।

रसा लोके ·· · निविसति।

फोट्ठब्बो · · · निविसति।

धम्मो · ·· निविसति।

चक्खु-विञ्ञाणं लोके पियरूपं सातरूप एत्थेसा तण्हा उप्पज्ज-
माना उपज्जति, एत्थेसा तण्हा निविसमाना निविसति।

सोत-विञ्ञान · · निविसति।

घाण-विञ्ञान · ·· निविसति।

जिह्वा-विञ्ञान ··· · · निविसति।

काय-विञ्ञान ·· · ·· ·· निविसति।

मनो-विञ्ञानं · निविसति।

चक्खु-सम्फस्सो लोके पियरूप सातरूप एत्थेसा तण्हा उप्प-
ज्जमाना उप्पज्जति, एत्थेसा तण्हा निविसमाना निविसति।

सोत सम्फस्सो ······ निविसति।

घाण-सम्फस्सो ·· निविसति।

जिह्वा सम्फस्सो ·· ·· निविसति।

काय-सम्फस्सो ·· ·· निविसति।

मनो-सम्फस्सो · ··· निविसति।

चक्खुसम्फस्सजा वेदना, सोतसम्फस्सजा वेदना घाण

सम्फस्सजा वेदना, जिह्वासम्फस्सजा वेदना, कायसम्फस्सजा वेदना, मनोसम्फस्सजा वेदना लोके पियरूपा सातरूपा, एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, एत्थ निविसमाना निविसति ॥

रूप-सञ्ञा, सद्द-सञ्ञा, गन्ध-सञ्ञा, रस सञ्ञा, फोट्ठब्ब सञ्ञा, धम्म-सञ्ञा, लोके पियरूपा सातरूपा, एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, एत्थ निविसमाना निविसति ॥

रूपसञ्चेतना, सद्दसञ्चेतना, गन्धसञ्चेतना, रस सञ्चेतना, फोट्ठब्बसञ्चेतना, धम्मसञ्चेतना लोके पियरूपा सातरूपा, एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, एत्थ निविसमाना निविसति ॥

रूपवितक्को, सद्दवितक्को, गन्धवितक्को, रसवितक्को फोट्ठब्ब वितक्को धम्मवितक्को, लोके पियरूपो सातरूपो, एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, एत्थ निविसमाना निविसति ॥

रूपविचारो, सद्दविचारो, गन्धविचारो, रसविचारो फोट्ठब्ब विचारो, धम्मविचारो, लोके पियरूपो सातरूपो, एत्थेसा तण्हा उप्पज्जमाना उप्पज्जति, एत्थ निविसमाना निविसति ॥

१ चक्खुना रूप दिस्वा पियरूपे रूपे सारज्जति, अप्पियरूपे रूपे व्यापज्जति, सोतेन सद्द सुत्वा, घाणेन गन्ध घायित्वा · जिह्वाय रस सायित्वा · · कायेन फोट्ठब्ब फुसित्वा मनसा धम्म विञ्ञाय पियरूपे धम्मे सारज्जति, अप्पिय रूपे धम्मे व्यापज्जति ॥

एव अनुरोधविरोधसमापन्नो य किञ्चि वेदन वेदेति सुख

---

१ मज्झिम निकाय (महातण्हासखय सुत्त)

या दुक्खं वा अदुक्खमसुखं वा, सो तं वेदनं अभिनन्दति अभिवदति अज्झोसाय तिट्ठति। तस्स तं वेदनं अभिनन्दतो अभिवदतो अज्झोसाय तिट्ठतो उप्पज्जति नन्दी, या वेदनासु नन्दी तदुपदानं, तस्स उपादानपच्चया भवो, भवपच्चया जाति, जातिपच्चया जरा-मरण-सोक-परिदेव-दुक्ख-दोमनस्सुपायासा सम्भवन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होति॥

१. कामहेतु कामनिदानं कामाधिकरणं कामानमेव हेतु राजानोपि राजूहि विवदन्ति, खत्तियापि खत्तियेहि विवदन्ति, ब्राह्मणापि ब्राह्मणेहि विवदन्ति, गहपतीपि गहपतीहि विवदन्ति, मातापि पुत्तेन विवदति, पुत्तोपि मातरा विवदति, पितापि पुत्तेन विवदति, पुत्तोपि पितरा विवदति, भातापि भातरा विवदति, भातापि भगिनिया विवदति, भगनीपि भातरा विवदति, सहायोपि सहायेन विवदति। ते तत्थ कलह-विग्गह-विवादमापन्ना अञ्ञमञ्ञं पाणीहिपि उपक्कमन्ति, दण्डेहिपि उपक्कमन्ति सत्थेहिपि उपक्कमन्ति। ते तत्थ मरणम्पि निगच्छन्ति, मरणमत्तम्पि दुक्खं।

पुन च परं भिक्खवे कामहेतु कामनिदानं कामाधिकरणं कामानमेव हेतु सन्धिम्पि छिन्दन्ति, निल्लोपम्पि हरन्ति, एकागारिकम्पि करोन्ति, परिपन्थेपि तिट्ठन्ति, परदारम्पि गच्छन्ति, तमेनं राजानो गहेत्वा विविधा कम्मकरणा कारेन्ति—कसाहिपि

१. मज्झिम निकाय, महादुक्खक्खन्ध सुत्त।

तालेन्ति, वेत्तेहिपि तालेन्ति, अद्धदण्डकेहिपि तालेन्ति हत्थम्पि छिन्दन्ति, पादम्पि छिन्दन्ति, हत्थपादम्पि छिन्दन्ति, सुनखेहि पि खादापेन्ति, जीवन्तम्पि सूले उत्तासेन्ति, असिनापि सीस छिन्दन्ति। ते तत्थ मरणम्पि निगच्छन्ति, मरणमत्तम्पि दुक्ख ॥

पुन च पर भिक्खवे कामहेतु कामनिदान कामाधिकरण कामानमेव हेतु कायेन दुच्चरितं चरन्ति, वाचाय दुच्चरित चरन्ति, मनसा दुच्चरितं चरन्ति, ते कायेन दुच्चरितं चरित्वा, वाचाय दुच्चरित चरित्वा, मनसा दुच्चरित चरित्वा कायस्स भेदा परम्मरणा अपाय दुग्गतिं विनिपात निरय उप्पज्जन्ति।

१ न अन्तलिक्खे न समुद्दमज्झे
न पब्बतानं विवर पविस्स
न विज्जति सो जगतिप्पदेसो
यत्थट्ठितो मुञ्चेय्य पापकम्मा ति ॥

२ होति सो भिक्खवे समयो, य महासमुद्द उस्सुस्सति विसुस्सति, न भवति। नत्वेवाह भिक्खवे अविज्जानीवरणान सत्तान तण्हासयोजनान सन्धावत ससरत दुक्खस्स अन्त किरिय वदामि ॥

---

१ धम्मपद ६-१२

२ सयुत्तनिकाय २१-१०

होति सो भिक्खवे समयो, य महापठवी डय्हति विनस्सति, न भवति। नत्वेवाह भिक्खवे अविज्जानीवरणान सत्तान तण्हासयोजनान सन्धावत ससरत दुक्खस्स अन्त-किरिय वदामि ॥

दुक्खनिरोधं अरियसच्चं
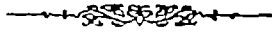
१ कतम च भिक्खवे दुखनिरोध अरियसच्च ? यो तस्सायेव तण्हाय असेसविरागनिरोधो चागो पटिनिस्सग्गो मुत्ति अनालयो ।

सा खो पनेसा तण्हा कत्थ पहीयमाना पहीयति, कत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ? य लोके पियरूप सातरूप, एत्थेसा तण्हा पहीयमाना पहीयति, एत्थ निरुज्झमाना निरुज्झति ॥

२. ये केचि भिक्खवे अनागतमद्धान समणा वा ब्राह्मणा वा य लोके पियरूप सातरूप त अनिच्चतो दक्खिन्ति, दुखतो दक्खिन्ति, रोगतो दक्खिन्ति, भयतो दक्खिन्ति त तण्ह पजहिस्सन्ति ।

३. यो च खो भिक्खवे रूपस्स निरोधो वूपसमो, अत्थगमो दुक्खस्सेसो निरोधो रोगान वूपसमो जरामरणस्स अत्थगमो । यो वेदनाय निरोधो यो सञ्ञाय निरोधो यो सखारान निरोधो, यो विञ्ञाणस्स निरोधो वूपसमो अत्थगमो दुक्खसेस्सो निरोधो रोगान वूपसमो जरामरणस्स अत्थगमो ।

---

१. दीर्घ निकाय , महासतिपटठान सुत्त ।
२. सयुक्त निकाय १२-७
३. सयुक्त निकाय १२-३

१ तण्हाय असेसविरागनिरोधा उपादाननिरोधो, उपादान निरोधा भवनिरोधो, भवनिरोधा जातिनिरोधो, जातिनिरोधा जरा-मरण-सोक-परिदेव दुक्ख-दोमनस्स-उपायासा-निरुज्झन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स निरोधो होति॥

२ एतं सन्तं, एतं पणीतं, यदिदं सब्बसङ्खारसमथो, सब्बूपधि पटिनिस्सग्गो, तण्हक्खयो विरागो, निरोधो, निब्बाणं॥

३ रत्तो पन भिक्खवे रागेन ' दुट्ठो दोसेन ' मूल्हो मोहेन अभिभूतो परियादिन्नचित्तो अत्तब्याबाधायपि चेतेति, परब्याबाधायपि चेतेति, उभयब्याबाधायपि चेतेति, चेतसिकम्पि दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति। मोहे पहीणे नेव अत्तब्याबाधायपि चेतेति, न परब्याबाधायपि चेतेति, न उभयब्याबाधायपि चेतेति, न चेतसिकम्पि दुक्खं दोमनस्सं पटिसंवेदेति। एवं खो भिक्खवे सन्दिट्ठिकं निब्बाणं होति अकालिकं एहिपस्सिकं ओपनयिकं पच्चत्तं वेदितब्बं विञ्ञूहीति॥

नेक्खम्मं अधिमुत्तस्स
पविवेकञ्च चेतसो
अब्यापज्जाधिमुत्तस्स
उपादानक्खयस्स च

---

१. इति वुत्तक ६-३
२. अगुत्तर निकाय ३-३२
३. अगुत्तर निकाय ३-३२

तस्स सम्माविमुत्तस्स
सन्तचित्तस्स भिक्खुनो
कतस्स पटिचयो नत्थि
करणीय न विज्जति ॥
सेलो यथा एकघनो
वातेन न समीरति
एव रूपा रसा सद्दा
गन्धा फस्सा च केवला
इट्ठा धम्मा अनिट्ठा च
न पवेधेन्ति तादिनो
ठित चित्त विप्पमुत्त
वयं चस्सानुपस्सति ॥
सङ्खाय लोकस्मि परोवरानि
यस्सिञ्जित नत्थि कुहिञ्चि लोके
सन्तो विधूमो अनिघो निरासो
अतारि सो जाति-जरन्तिब्रूमीति ॥

१. अत्थि भिक्खवे तदायतन, यत्थ नेव पठवी, न आपो, तेजो, न वायो, न आकासानञ्चायतन, न नेवसञ्ञाना ञ्ञायतन नाय लोको, न परो लोको, न उभो चन्दिमसुरिया- तदह भिक्खवे नेव आगति वदामि, न गति, न ठिति, न चु

---

१. उदान ८-१

त उप्पत्ति, अप्पनिट्ठ अप्पवत्त अनारम्मणमेवेत, एसेव अन्तो दुक्खस्स ॥

१. अत्थि भिक्खवे अजातं, अभूत, अकत, असङ्खत। नो चे त भिक्खवे अभविस्स अजात, अभूत, अकत, असङ्खत, नयिद जातस्स कतस्स असङ्खतस्स निस्सरण पञ्ञायेथ। यस्मा च खो भिक्खवे अत्थि अजात, अभूत, अकत, असङ्खत, तस्मा जातस्स, भूतस्स कतस्स, सङ्खतस्स, निस्सरणं पञ्ञायतीति ॥

---

१. इतिवुत्तकं २-२ ६

दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्च

१. यो चायं कामेसु कामसुखल्लिकानुयोगो हीनो गम्मो पोथुज्जनिको अनरियो अनत्थसंहितो, यो चायं अत्तकिलमथानुयोगो दुक्खो अनरियो अनत्थसंहितो- एते ते उभो अन्ते अनुपगम्म मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा चक्खुकरणी ञाणकरणी उपसमाय अभिञ्ञाय सम्बोधाय निब्बाणाय संवत्तति ॥

अयमेव अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो दुक्ख निरोधगामिनी पटिपदा सेय्यथीदं—

१ सम्मा दिट्ठि २ सम्मा सङ्कप्पो	(क) पञ्ञा
३. सम्मा वाचा ४ सम्मा कम्मन्तो ५. सम्मा आजीवो	(ख) सील
६. सम्मा वायामो ७. सम्मा सति ८ सम्मा समाधि	(ग) समाधि

---

१. सयुक्त निकाय

१ एसोव मग्गो नत्थञ्ञो
दस्सनस्स विसुद्धिया
एतम्हि तुम्हे पटिपन्ना
दुक्खस्सन्तं करिस्सथ ॥

२. अत्तदीपा भवथ भिक्खवे अत्तसरणा अनञ्ञसरणा।

३ तुम्हेहि किच्च आतप्प
अक्खातारो तथागता ॥

४. ओदहथ भिक्खवे सोत, अमतमधिगत अह अनुसासामि, अह धम्म देसेमि, यथानुसिट्ठं तथा पटिपज्जमाना न चिरस्सेव यस्सत्थाय कुलपुत्ता सम्मदेव अगारस्मा अनगारिय पब्बजन्ति तदनुत्तरं ब्रह्मचरिय दिट्ठेव धम्मे सय अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरिस्सथ ॥

—.oo:—

---

१ धम्मपद २०-२
२. दीघ निकाय, महापरिनिर्वाण सुत्त
३ धम्मपद २०-४
४ मज्झिमनिकाय, पासरासि सुत्त

सम्मादिट्ठि

[१] कतमा च भिक्खवे सम्मादिट्ठि ? यतो खो भिक्खवे अरियसावको अकुसलञ्च पजानाति, अकुसलमूलञ्च पजानाति, कुसलञ्च पजानाति, कुसलमूलञ्च पजानाति, एत्तावतापि खो भिक्खवे अरियसावको सम्मादिट्ठि होति उजुगतास्स दिट्ठि, धम्मे अवेच्चप्पसादेन समन्नागतो, आगतो इमं सद्धम्मं ॥

कतमञ्च भिक्खवे अकुसलं ?

१. पाणातिपातो अकुसलं २. अदिन्नादानं अकुसलं ३. कामेसु मिच्छाचारो अकुसलं	(काय कम्म)
४ मुसावादो अकुसलं ५ पिसुणावाचा अकुसलं ६ फरुसा वाचा अकुसलं ७ सम्फप्पलापो अकुसलं	(वची कम्म)
८ अभिज्झा अकुसलं ९. व्यापादो अकुसलं १०. मिच्छादिट्ठि अकुसलं	(मनो कम्म)

---

१. मज्झिम निकाय, सम्मादिट्ठि सुत्त

कतमञ्च भिक्खवे अकुसलमूलं ? लोभो अकुसलमूलं, दोसो अकुसलमूलं, मोहो अकुसलमूलं ।

१. कतमञ्च भिक्खवे कुसलं ?

१. पाणातिपाता वेरमणी कुसलं
२ अदिन्नादाना वेरमणी कुसलं
३. कामेसु मिच्छाचारा वेरमणी कुसलं
४. मुसावादा वेरमणी कुसलं
५ पिसुणाय वाचाय वेरमणी कुसलं
६ फरुसाय वाचाय वेरमणी कुसलं
७ सम्फप्पलापो वेरमणी कुसलं
८ अनभिज्झा कुसलं
९ अब्यापादो कुसलं
१० सम्मादिट्ठि कुसलं

(काय कम्म) — १–३
(वचीकम्म) — ४–७
(मनोकम्मं) — ८–१०

कतमञ्चसलं भिक्ख कुसलं ?

अलोभो कुसलमूलं, अदोसो कुसलमूलं, अमोहो कुसलमूलं ।

यतो खो भिक्खवे अरियसावको दुक्खञ्च पजानाति, दुक्ख समुदयञ्च पजानाति, दुक्खनिरोधञ्च पजानाति, दुक्खनिरोध गामिनि पटिपदञ्च पजानाति; एत्तावतापि खो भिक्खवे अरिय सावको सम्मादिट्ठि होति ॥

---

१. मज्झिम निकाय, सम्मादिट्ठि सुत्त

सम्मादिट्ठि

१ कतमा च भिक्खवे सम्मादिट्ठि ? यतो खो भिक्खवे अरियसावको अकुसलञ्च पजानाति, अकुसलमूलञ्च पजानाति, कुसलञ्च पजानाति, कुसलमूलञ्च पजानाति, एत्तावतापि खो भिक्खवे अरियसावको सम्मादिट्ठि होति उजुगतास्स दिट्ठि, धम्मे अवेच्चप्पसादेन समन्नागतो, आगतो इमं सद्धम्मं ॥

कतमञ्च भिक्खवे अकुसलं ?

१. पाणातिपातो अकुसलं २. अदिन्नादानं अकुसलं ३. कामेसु मिच्छाचारो अकुसलं	(काय कम्म)
४ मुसावादो अकुसलं ५ पिसुणावाचा अकुसलं ६ फरुसा वाचा अकुसलं ७. सम्फप्पलापो अकुसलं	(वची कम्म)
८ अभिज्झा अकुसलं ९. व्यापादो अकुसलं १०. मिच्छादिट्ठि अकुसलं	(मनो कम्म)

---

१. मज्झिम निकाय, सम्मादिट्ठि सुत्त

कतमञ्च भिक्खवे अकुसलमूलं ? लोभो अकुसलमूलं, दोसो अकुसलमूलं, मोहो अकुसलमूलं ।

१. कतमञ्च भिक्खवे कुसलं ?

१. पाणातिपाता वेरमणी कुसलं
२ अदिन्नादाना वेरमणी कुसलं (काय कम्म)
३ कामेसु मिच्छाचारा वेरमणी कुसलं
४. मुसावादा वेरमणी कुसलं
५ पिसुणाय वाचाय वेरमणी कुसलं (वचीकम्म)
६ फरुसाय वाचाय वेरमणी कुसलं
७ सम्फप्पलापा वेरमणी कुसलं
८ अनभिज्झा कुसलं
९ अब्यापादो कुसलं (मनोकम्म)
१० सम्मादिट्ठि कुसलं

कतमञ्चसन भिक्खु कुसलं ?

अलोभो कुसलमूलं, अदोसो कुसलमूलं, अमोहो कुसलमूलं ।

यतो खो भिक्खवे अरियसावको दुक्खञ्च पजानाति, दुक्ख समुदयञ्च पजानाति, दुक्खनिरोधञ्च पजानाति, दुक्खनिरोध गामिनि पटिपदञ्च पजानाति, एत्तावतापि खो भिक्खवे अरिय सावको सम्मादिट्ठि होति ॥

---

१. मज्झिम निकाय, सम्मादिट्ठि सुत्त

१ यो खो भिक्खवे एव वदेय्य'—न तावाह् भगवति ब्रह्मचरिय चरिस्सामि, यावमे भगवा न व्याकरिस्सति सस्सतो लोको तिवा, असस्सतो लोको तिवा, अन्तवा लोको तिवा अनन्तवा लोको ति वा, त जीव त सरीरन्ति वा, अञ्ञ जीव अञ्ञ सरीर' न्ति वा होति तथागतो परम्मरणाति वा, न होति तथागतो परम्मरणा तिवा, ति अव्याकतमेव त भिक्खवे तथागतेन अस्स, अथ सो पुग्गलो काल करेय्य ।

२. सेय्यथापि भिक्खवे पुरिसो सल्लेन विद्धो अस्स सविसेन गाल्हापलेपनेन, तस्सा मित्ता मच्चा ञातिसालोहिता भिसक्क सल्लकत्त उपट्ठापेय्यु । सो एव वदेय्य "नतावाह इम सल्ल आहारिस्सामि याव न त पुरिस जानामि येनम्हि विद्धो—खत्तियो वा ब्राह्मणो वा वेस्सो वा सुद्दो वा 'ति । अनञ्ञातमेव त भिक्खवे तेन पुरिसेन अस्स, अथ सो पुरिसो काल करेय्य । सो एव वदेय्य—'न तावाह इम सल्ल आहारिस्सामि, याव न त पुरिस जानामि येनम्हि विद्धो—'एव नामो एव गोत्तो' तिवा" ति ·· सो एव वदेय्य—"न तावाह इम सल्ल आहारिस्सामि, याव न त पुरिस जानामि येनम्हि विद्धो दीघो वा रस्सो वा मज्झिमो वा" ति · काल करेय्य ।

"सस्सतो लोको" ति भिक्खवे दिट्ठिया सति, अत्थेव

---

१. सयुक्त निकाय २१-५

२ मज्झिम निकाय, चूल मालुक्य सुत्त

जाति, अत्थि जरा, अत्थि मरणं, सन्ति सोक-परिदेव-दुक्ख—दोमनस्सुपायासा, येसाहं दिट्ठेव धम्मे निघातन पञ्ञपेमि। "असस्सतो लोको" ति वा दिट्ठिया सति "अन्तवा लोको" ति वा दिट्ठिया सति, "अनन्तवा लोको" ति वा दिट्ठिया सति पञ्ञपेमि।

१ इध भिक्खवे अस्सुतवा पुथुज्जनो अरियान अदस्सावी अरियधम्मस्स अकोविदो अरियधम्मे अविनीतो सप्पुरिसान अदस्सावी सप्पुरिसधम्मस्स अकोविदो सप्पुरिसधम्मे अविनीतो सक्कायदिट्ठी परियुट्ठितेन चेतसा विहरति सक्काय-दिट्ठिपरेतेन, उप्पन्नाय च सक्कायदिट्ठिया निस्सरणं यथाभूतं नप्पजानाति। तस्स सा सक्कायदिट्ठि थामगता अप्पटिविनीता ओरम्भागियं सञ्ञोजनं विचिकिच्छापरियुट्ठितेन चेतसा · सीलब्बतपरियुट्ठितेन चेतसा · कामरागपरियुट्ठितेन चेतसा व्यापादपरियुट्ठितेन चेतसा विहरति ·· ·· तस्स सो व्यापादो थामगतो अप्पटिविनीतो ओरम्भागियं सञ्ञोजनं।

सो मनसिकरणीये धम्मे अप्पजानन्तो अमनसिकरणीये धम्मे अप्पजानन्तो ये धम्मा न मनसिकरणीया, ते धम्मे मनसि करोति ये धम्मा मनसिकरणीया, ते धम्मे न मनसि करोति।

---

१. मज्झिम निकाय महा-मालुक्य सुत्त

१ सो एवं अयोनिसो मनसिकरोति—"अहोसि नु खो अहं अतीतमद्धानं ? न नु खो अहोसि अतीतमद्धानं ? किन्नु खो अहोसि अतीतमद्धानं ? कथन्नु खो अहोसि अतीतमद्धानं ? किं हुत्वा किं अहोसिन्नुखो अहं अतीतमद्धानं ? भविस्सामि नु खो अहं अनागतमद्धानं ? न नु खो भविस्सामि अनागतमद्धानं ? किन्नु खो भविस्सामि अनागतमद्धानं ? कथन्नु खो भविस्सामि अनागतमद्धानं ? किं हुत्वा किं भविस्सामि नु खो अहं अनागतमद्धानन्ति ? एतरहि वा पच्चुप्पन्नं अद्धानं आरब्भ अज्झत्तं कथंकथी होति !' अहन्नु खो अस्मि ? नो नु खो अस्मि ? किन्नु खो अस्मि ? कथन्नु खो अस्मि ? अयन्नु खो सत्तो कुतो आगतो ? सो कुहिं गामी भविस्सतीति ?"

तस्स एवं अयोनिसो मनसिकरोतो छन्नं दिट्ठीनं अञ्ञतरा दिट्ठि उप्पज्जति—"अत्थि मे अत्ता" ति वा "नत्थि मे अत्ता" ति वास्स सच्चतो थेततो दिट्ठि उप्पज्जति, "अत्तनाव अत्तानं सञ्जानामि" 'ति वास्स सच्चतो थेततो दिट्ठि उप्पज्जति, "अनत्तनाव अत्तानं सञ्जानामी "ति वास्स सच्चतो थेततो दिट्ठि उप्पज्जति।

अथवा पनस्स एवं दिट्ठि होति —"यो मे अयं अत्ता वदो वेदेय्यो तत्र तत्र कल्याण पापकानं कम्मानं विपाकं पटिसंवेदेति, सो खो पन मे अयं अत्ता निच्चो धुवो सस्सतो अविपरिणाम

---

१ मज्झिम निकाय, सब्बासव सुत्त

धम्मो सम्मतिसम तथेव ठम्सतीति।" अय भिक्खवे केवलो परिपूर्ण चालधम्मो।

इद वुश्चति भिक्खवे दिट्ठिगत दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तार दिट्ठिविसूक दिट्ठिविप्फन्दितं, दिट्ठिसञ्ञोजनं। दिट्ठि सयोजनसंयुत्तो भिक्खवे, अस्सुतवा पुथज्जनो न परिमुश्चति जरामरणेन सोकेहि परिदेवेहि दुक्खेहि दोमनस्सेहि उपायासेहि. न परिमुश्चति दुक्खस्माति वदामि।

सुतवा च भिक्खवे अरियसावको अरियान दस्सावी अरियधम्मस्स कोविदो अरियधम्मे सुविनीतो. सप्पुरिसान दस्सावी सप्पुरिसधम्मस्स कोविदो सप्पुरिसधम्मे सुविनीतो मनसिकरणीये धम्मे पजानाति. अमनसिकरणीये धम्मे पजानाति। सो मनसिकरणीये धम्मे पजानन्तो अमनसिकरणीये धम्मे पजानन्तो, ये धम्मा न मनसि करणीया ते धम्मे न मनसिकरोति ये धम्मा मनसिकरणीया ते धम्मे मनसिकरोति। सो 'इद दुक्ख' ति योनिसो मनसि करोति. "अय दुक्खसमुदयो' ति योनिसो' मनसि करोति. 'अयं दुक्ख निरोधो' ति योनिसो मनसि करोति, 'अय दुक्ख निरोध गामिनी पटिपदा' ति योनिसो मनसिकरोति।

तस्स एव मनसि करोतो तीणि सयोजनानि पहीयन्ति— सक्कायदिट्ठि. विचिकिच्छा. सीलब्बतपरामासो। योम खो पन भिक्खवे भिक्खुस तीणि सयोजनानि पहीनानि. सब्बे ते सोतापन्ना अविनिपातधम्मा नियता सम्बोधिपरायणा।'

१. पथव्या एकरज्जेन
सग्गस्स गमनेन वा
सब्बलोकाधिपच्चेन
सोतापत्तिफल वर' ति

२ योसो भिक्खवे एवपुच्छेय्य— 'अत्थिपन भोतो गोतमस्स
किञ्चि दिट्ठिगत' ति? तस्सेत भिक्खवे किन्ति व्याकरणीय—
"दिट्ठिगतन्ति खो भिक्खवे अपनीतमेत तथागतस्स
दिट्ठ हेत भिक्खवे तथागतस्स–इति रूप, इति
रूपस्स समुदयो, इति रूपस्स अत्थगमो, इति वेदना
इति वेदनाय समुदयो, इति वेदनाय अत्थगमो, इति
सञ्ञा, इति सञ्ञाय समुदयो, इति सञ्ञाय अत्थङ्गमो, इति
सङ्खारा, इति सङ्खारान समुदयो, इति सङ्खारन अत्थङ्गमो, इति
विञ्ञान, इति विञ्ञानस्स समुदयो, इति विञ्ञानस्स अत्थङ्गमा
तस्मा तथागतो सब्ब मञ्ञितान सब्बमथितान सब्ब अहङ्कार
—ममङ्कार—मानानुसयान खया विरागा निरोधा चागा पटिनि
स्सग्गा अनुपादा विमुत्तो" ति वदामि ॥

३ उप्पादा वा भिक्खवे तथागतान अनुप्पादा वा तथागतान
ठिताव सा धातु धम्मट्ठितता धम्मनियामता—"सब्बे सङ्खारा

---

१ धम्मपद १३. १२.

२ मज्झिम निकाय, अग्गि-वच्छगोत्त सुत्त

३ अगुत्तर-निकाय ३.१३४

अनिच्चा, सेय्यथीद—रूप अनिच्च. वेदना अनिच्चा, सञ्ञा अनिच्चा, सङ्खारा अनिच्चा विञ्ञाण अनिच्चन्ति ॥

उप्पादा वा भिक्खवे तथागतान अनुप्पादा वा तथागतान ठिताव सा धातु धम्मट्ठितता धम्मनियमता ।

सब्बे सङ्खारा दुक्खा, सेय्यथीद—रूप दुक्ख वेदना दुक्खा, सञ्ञा दुक्खा, सङ्खारा दुक्खा विञ्ञाण दुक्खन्ति ।

उप्पादा वा भिक्खवे तथागतान अनुप्पादा वा तथागतान, ठिताव सा धातु धम्मट्ठितता धम्मनियामता—"सब्बे धम्मा अनत्ता, सेय्यथीद—रूप अनत्ता, वेदना अनत्ता, सञ्ञा अनत्ता, सङ्खारा अनत्ता, विञ्ञाण अनत्तति ॥

१. "रूप भिक्खवे निच्च धुव सस्सत अविपरिणामधम्म नत्थी" ति सम्मत लोके पण्डितान । अहम्पि 'त नत्थी 'ति वदामि । "वेदना-सञ्ञा-सङ्खारा-विञ्ञान निच्च धुव सस्सत अविपरिणामधम्मा नत्थी' ती सम्मत लोके पण्डितान । अहम्पि "त नत्थी ति वदामि । यो पन भिक्खवे तथागतेन एव आचिक्खियमाने देसियमाने पञ्ञापियमाने पट्ठपियमाने विवरियमाने विभजियमाने उत्तानीकरियमाने न जानाति न पस्सति. तमह भिक्खवे बाल पुथुज्जन अन्ध अचक्खु अजानन्त, अपस्सन्त किन्ति करोमि ।

---

१ संयुत्त निकाय १६

,,

१ अट्ठान हेत भिक्खवे अनवकासो य दिट्ठिसम्पन्नो पुग्गलो किञ्चि धम्म अत्ततो उपगच्छेय्य नेत ठान विज्जति ॥

२ तत्र भिक्खवे यो सो एवमाह ' वेदना मे अत्ता" ति, सो एवमस्स वचनीयो "तिस्सो खो इमा आवुसो वेदना; सुखा वेदना, दुक्खा वेदना, अदुक्खमसुखा वेदना . इमासं खो त्व तिस्सन्न वेदनान कतम अत्ततो समनुपस्ससी ' ती यस्मि हि भिक्खवे समये सुख वेदन वेदेति, नेव तस्मि समये दुक्ख वेदन वेदेति, न अदुक्खमसुख वेदन वेदेति. सुख येव तस्मि समये वेदन वेदेति । यस्मि भिक्खवे समये दुक्ख वेदन वेदेति नेव तस्मि समये सुख वेदन वेदेति, न अदुक्खमसुख वेदन वेदेति दुक्ख येव तस्मि समये वेदन वेदेति । यस्मि भिक्खवे समये अदुक्खमसुख वेदन वेदेति, नेव तस्मि समये सुख वेदन वेदेति, न दुक्ख वेदन वेदेति, अदुक्खमसुख येव तस्मि समये वेदन वेदेति ।

इमा खो भिक्खवे तिस्सो वेदना अनिच्चा, सङ्खता पटिच्च समुप्पन्ना खयधम्मा वयधम्मा विरागधम्मा निरोध धम्मा । यस्स अञ्ञतर वेदन वेदियामानस्स "एसो मे अत्ता" ति होति, इति सो दिट्ठेव धम्मे अनिच्च सुख-दुक्ख-वोकिण्ण उप्पाद-वयधम्म अत्तान समनुपस्समानो समनुपस्सति ।

---

१ अगुत्तर निकाय १ १५.

२ दीघ निकाय, महानिदान सुत्त

तत्र भिक्खवे यो सो एवमाह। "न हेव खो मे वेदना अत्ता, प्पटिसवेदनो मे अत्ता' ति, सो एवमस्स वचनीयो "यत्थ ावुसो वेदयित नत्थि, अपि नु खो तत्थ' अहमयमस्मीति सया ति" ?

तत्र भिक्खवे यो सो एवमाह "न हेव खो मे वेदना त्ता। नोपि अप्पटिसवेदनो मे अत्ता, अत्ता मे वेदियति, वेदना म्मो हि मे अत्ता ति।" सो एवमस्स वचनीयो "वेदना च ावुसो सब्बेन सब्ब सब्बथा सब्ब अपरिसेसा निरुज्झेय्यु'। ब्बसो वेदनाय असति वेदनाय निरोधा अपि नु खो तत्थ अयमहमस्मि' ति सिया ति ?"

१ "मनो अत्ता ति' यो वदेय्य त न उपज्जति मनस्स उप्पादो पे वयो पि पञ्ञायति। यस्स खो पन उप्पादो पि वयो पि ञ्ञायति 'अत्ता मे उपज्जति चवति वाति इच्चस्स एवमागत ोति। तस्मा त न उप्पज्जति "मनो अत्ता ति" इति। मनो अनत्ता। "धम्मा अत्ता ति' यो वदेय्य त न उपज्जति। धम्मानं उप्पादोपि वयोपि पञ्ञायति, यस्स खो पन उप्पादोपि वयोपि पञ्ञायति 'अत्ता मे उपज्जति चवति वा" ति इच्चस्स एवमागत होति। तस्मा त न उपज्जति "धम्मा अत्ता" ति इति धम्मा अनत्ता।

"मनो विञ्ञान अत्ता" ति यो वदेय्य त न उप्पज्जति। मनो विञ्ञानस्स उपादोपि वयोपि पञ्ञायति। यस्स खो पन

१ मज्झिमनिकाय, छक्क सुत्त

उप्पादो पि वयो पि पञ्ञायति "अत्ता मे उप्पज्जति चवति वा ति' इच्चस्स एवमागत होति । तस्मा त न उप्पज्जति 'मनोविञ्ञान अत्ता" ति । इति मनोविञ्ञान अनत्ता ।

१ वर भिक्खवे अस्सुतवा पुथुज्जनो इम चातुमहाभूतिक काय अत्ततो उपगच्छेय्य, नत्वेव चित्त । त किस्स हेतु ? दिस्सति भिक्खवे चातुमहाभूतिको कायो एकम्पि वस्स तिट्ठमानो द्वेपि वस्सानि तिट्ठमानो, तीणि पि चत्तारिपि पञ्चपि छपि सत्तपि वस्सानि तिट्ठमानो यञ्च खो एतं भिक्खवे वुच्चति 'चित्त' इतिपि 'मनो' इतिपि 'विञान इतिपि त रत्तिया च दिवसस्स च अञ्ञदेव उप्पज्जति, अञ्ञ निरुज्झति ।

तस्मातिह भिक्खवे य किञ्चि रूप अतीतानागतपच्चुपन्न, अज्झत्त वा, वहिद्धा वा ओलारिक वा सुखुम वा, हीन वा पणीत वा, य दूर सन्तिक वा सब्ब रूप 'नेत मम, नेसो हमस्मि, न मेसो अत्ताति एवमेत सम्मापञ्ञाय दट्ठब्ब । याकाचि वेदना या काचि सञ्ञा ये केचि सङ्खारा य किञ्चि विञ्ञान, अतीतानागत पच्चुप्पन्न, अज्झत्त वा वहिद्धा वा ओलारिक वा सुखुम वा हीन वा पणीत वा, य दूरे सन्तिके वा, सब्ब विञ्ञान "नेत मम, नेसोहमस्मि, न मेसो अत्ता ति' एवमेत यथाभूत सम्मपञ्ञाय दट्ठब्ब ।

---

१. सयुत्त निकाय १२ ७

१. सचे पन मं भिक्खवे एवं पुच्छेय्युं, "अहोसि त्वं अतीतमद्धानं, न त्वं नाहोसि ?" भविस्ससि त्वं अनागतमद्धानं, न त्वं न भविस्ससि ? 'अत्थि त्वं एतरहि, न त्वं नत्थि' इति ?

एवं पुट्ठो अहं भिक्खवे एवं व्याकरेय्य—"अहोसाहं अतीतमद्धानं नाहं नाहोसि, भविस्सामहं अनागतमद्धानं नाहं न भविस्सामि अत्थाहं एतरहि नाहं नत्थि" इति एवं पुट्ठो अहं भिक्खवे एवं व्याकरेय्यन्ति।

यो खो भिक्खवे पटिच्चसमुप्पादं पस्सति, सो धम्मं पस्सति, यो धम्मं पस्सति, सो पटिच्चसमुप्पादं पस्सति। सेय्यथापि भिक्खवे गवा खीरं, खीरम्हा दधि, दधिम्हा नवनीतं नवनीतम्हा सप्पि सप्पिम्हा सप्पिमण्डो, यस्मिं समये खीरं होति नेव तस्मिं समये दधि इति सङ्खं गच्छति न नवनीतं न सप्पीति,—न सप्पिमण्डो ति खीरन्त्वेव सङ्खं गच्छति. यस्मिं समये 'दधि' होति दधित्वेव तस्मिं समये संखं गच्छति। एवमेव खो भिक्खवे यो मे अहोसि अतीतो अत्तपटिलाभो सो व अत्तपटिलाभो तस्मिं समये सच्चो अहोसि, मोघो अनागतो, मोघो पच्चुप्पन्नो। यो मे भविस्सति अनागतो अत्तपटिलाभो सो व मे अत्तपटिलाभो तस्मिं समये सच्चो भविस्सति मोघो अतीतो मोघो पच्चुप्पन्नो। यो मे एतरहि पच्चुप्पन्नो अत्तपटिलाभो सो व मे अत्तपटिलाभो सच्चो मोघो अतीतो, अनागतो।

१ दीघ निकाय, पोट्ठपाद सुत्त।

इमा खो भिक्खवे लोकसमञ्ञा लोकनिरुत्तिया लोक वोहारा-लोक पञ्ञत्तियो, याहि तथागतो वोहरति अपराम-सन्ति।

१. "त जीव त सरीर" ति वा भिक्खवे दिट्ठिया सति ब्रह्म-चरियवासो न होति। "अञ्ञ जीव अञ्ञ सरीर' ति वा भिक्खवे दिट्ठिया सति ब्रह्मचरियवासो न होति।

एते ते भिक्खवे उभो अन्ते अनुपगम्म मज्झेन तथागतो धम्म देसेति।

अविज्जा पच्चया सङ्खारा, सङ्खार पच्चया विञ्ञान, विञ्ञान पच्चया नामरूप, नामरूप पच्चया सलायतन, सलायतन पच्चया फस्सो, फस्स पच्चया वेदना, वेदना पच्चया तण्हा, तण्हा पच्चया उपादानं, उपादान पच्चया भवो, भव पच्चया जाति, जाति पच्चया जरामरण सोक-परिदेव-दुक्ख-दोमनस्सुपायासा सम्भवन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स समुदयो होति। अय वुच्चति भिक्खवे पटिच्चसमुप्पादो।

अविज्जायत्वेव असेस विराग निरोधा सखार निरोधो सखार निरोधा विञ्ञान निरोधो, विञ्ञान निरोधा नामरूप निरोधो, नामरूप निरोधा सलायतन निरोधो, सलायतन निरोधा फस्स निरोधो, फस्स निरोधा वेदना निरोधो, वेदना निरोधा तण्हा निरोधो, तण्हा निरोधा उपादान निरोधो, उपादान निरोधा भव

---

१ अगुत्तर निकाय ३

निरोधा भव निरोधा जाति निरोधो, जाति निरोधा जरामरण सोक-परिदेव दुक्ख दोमनस्सुपायासा निरुज्झन्ति। एवमेतस्स केवलस्स दुक्खक्खन्धस्स निरोधो होति ति ॥

१. अविज्जा नीवरणानं खो भिक्खवे सत्तान तण्हा सञ्ञो-जनान तत्र तत्राभिनन्दना एवं आयति पुनब्भवाभिनिब्बत्ति होति।

२. य भिक्खवे लोभपकत कम्मं लोभज लोभनिदान लोभ-समुदय यत्थ अस्स अत्तभावो निब्बत्तति तत्थ त कम्मं विपच्चति. य भिक्खवे दोसपकत कम्म दोसज दोसनिदानं दोससमुदय · मोहपकत कम्म मोहज मोहनिदान मोहसमुदय यत्थास्स अत्तभावो निब्बत्तति. तत्थ त कम्मं विपच्चति। यत्थ त कम्म विपच्चति तत्थ तस्स कम्मस्स विपाक पटिसंवेदेति दिट्ठेव धम्मे उपज्जित्वा अपरे वा परियाये।

३. अविज्जा विरागा पन भिक्खवे विञ्ञाणुप्पादा तण्हा निरोधा एवं आयति पुनब्भवाभिनिब्बत्ति न होति। य हि भिक्खवे अलोभपकत कम्म अलोभज अलोभनिदान अलोभसमुदय अदोसपकत कम्म अदोसज अदोसनिदान अदोससमुदय अमोहपकत कम्म अमोहज अमोह-निदान अमोहसमुदय

१. मज्झिम निकाय, महावेदल्ल सुत्त।
२. अङ्गुत्तर निकाय ३.३३
३ मज्झिम निकाय महावेदल्ल सुत्त।

लोभे विगते, दोसे विगते, मोहे विगते एवं ते कम्मं पहीनं होति उच्छिन्न मूलं तालावत्थुकतं, अनभावकतं आयति अनुप्पाद धम्मं।

१. इमिना खो परियायेन सम्मावदमानो वदेय्य 'उच्छेदवादो समणो गोतमो, उच्छेदे धम्मं देसेति, तेन च सावके विनेति ति, अहं ही भिक्खवे उच्छेदं वदामि रागस्स दोसस्स मोहस्स अनेकविहितानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं उच्छेदं वदामि इति ॥

१ अंगुत्तर निकाय २.

सम्मासङ्कप्पो

कतमो च भिक्खवे सम्मासङ्कप्पो ?

नेक्खम्म सङ्कप्पो

अव्यापाद सङ्कप्पो

अविहिंसा सङ्कप्पो, अय वुच्चति भिक्खवे सम्मासङ्कप्पो।

इध भिक्खवे गहपति वा गहपतिपुत्तो वा अञ्ञतरस्मिं वा कुले पच्चाजातो तथागतस्स धम्म सुणाति। सो तथागतस्स धम्म सुत्वा तथागते सद्ध पटिलभति, सो तेन सद्धा पटिलाभेन समन्नागतो इति पटिसचिक्खति: सम्बाधो घरावासो रजापथो, अब्भोकासो पब्बज्जा, नयिद सुकरं अगार अज्झावसता एकन्त परिपुण्ण एकन्तपरिसुद्ध सङ्खलिखित ब्रह्मचरिय चरितु य नूनाहं केसमस्सु ओहारेत्वा कासायानि वत्थानि अच्छादेत्वा अगारस्मा अनगारियं पब्बजेय्य ति।" सो अपरेन समयेन अप्प वा भोगक्खन्ध पहाय, महन्त वा भोगक्खन्ध पहाय अप्प वा जाति परिवट्ट पहाय महन्त वा जाति परिवट्ट पहाय केसमस्सु ओहारेत्वा कासायानि वत्थानि अच्छादेत्वा अगारस्मा अनगारिय पब्बजति।

सम्मावाचा

कतमा च भिक्खवे सम्मावाचा ?

१ इध भिक्खवे एकच्चो मुसावादं पहाय मुसावादा पटिविरतो होति सच्चवादी सच्चसन्धो थेतो पच्चयिको अविसंवादको लोकस्स । सभागतो वा परिसगतो वा ञातिमज्झगतो वा पूगमज्झगतो वा राजकुलमज्झगतो वा अभिनीतो सक्खिपुट्ठो 'एवम्भो पुरिस यं जानासि तं वदेहीति, सो अजानं वा आह नजानामीति, जानं वा आह जानामीति अपस्सं वा आह न पस्सामीति, पस्सं वा आह पस्सामीति इति । अत्तहेतु वा परहेतु वा आमिसकिञ्चिक्खहेतु वा न सम्पजानं मुसाभासिता होति ।

पिसुणं वाचं पहाय पिसुणाय वाचाय पटिविरतो होति न इतो सुत्वा अमुत्र अक्खाता इमेसं भेदाय अमुत्र वा सुत्वा न इमेसं अक्खाता अमुसं भेदाय इति भिन्नानं वा सन्धाता सहितानं वा अनुप्पादेता समग्गारामो समग्गरतो समग्गनन्दी समग्गकरणिं वाचं भासिता होति ।

फरुसं वाचं पहाय फरुसाय वाचाय पटिविरतो होति या सा वाचा नेला कन्नसुखा पेमनीया हदयङ्गमा पोरी बहुजन-

---

१ अंगुत्तर निकाय १०

कन्ता बहुजनमनापा तथारूपि वाच भासिता होति।

(सो जानाति)

१ "अक्कोच्छि म अवधि म अजिनि मं अहासि मे
य त उपनय्हन्ति वेर नेस न सम्मति॥"
"न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचन
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनोति'॥

उभतो दण्डकेनपि च भिक्खवे ककचेन चोरा ओचरका अङ्गमङ्गानि ओकन्तेय्यु—तत्रापि यो मनो पदूसेय्य न मे मो तेन सासन करो; तत्रापि वो भिक्खवे एव सिक्खितब्ब—न चेव नो चित्त विपरिगत भविस्सति, न च पापिक वाच निच्छारेस्साम हितानुकम्पी च विहरिस्साम मेत्तचित्ता न दोसन्तरा, न च पुग्गल मेत्तासहगतेन चेतसा फरित्वा विहरिस्साम, तदारम्मण च सब्बावन्त लोक मेत्तासहगतेन चेतसा विपुलेन महग्गतेन अप्पमाणेन अवेरेन अब्यापज्जेन फरित्वा विहरिस्साम ति, एव हि वो भिक्खवे सिक्खितब्बं।

२. सम्फप्पलाप पहाय सम्फप्पलापा पटिविरतो होति काल वादी भूतवादी अत्थवादी धम्मवादी विनयवादी निधानवति वाच भासिता होति कालेन सापदेस परियन्तवतिं अत्थसहित।

---

१ धम्मपद १, ३,४
२ अंगुत्तर निकाय १

सम्माआजीवो

कतमो च भिक्खवे सम्मा आजीवो ?

१ इध भिक्खवे अरियसावको मिच्छा आजीवं पहाय सम्मा आजीवेन जीविकं कप्पेति ।

अयं वुच्चति भिक्खवे सम्माआजीवो ।

२ पञ्चिमा भिक्खवे वणिज्जा उपासकेन अकरणीया कतमा पञ्च ? सत्थ-वणिज्जा सत्त-वणिज्जा मसवणिज्जा मज्ज वणिज्जा विसवणिज्जा ति ॥

— ०० —

१. दीर्घ निकाय, महासतिपट्ठान सुत्त ।
२. अंगुत्तर निकाय, ५

सम्मावायामो

१. चत्तारिमानि भिक्खवे सम्मप्पधानानि, सेय्यथीद—संवरप्पधानं, पहानप्पधानं, भावनाप्पधानं अनुरक्खणप्पधानं अयं वुच्चति भिक्खवे सम्मावायामो।

कतमञ्च भिक्खवे संवरप्पधानं ? इध भिक्खवे भिक्खु अनुप्पन्नानं पापकानं अकुसलानं धम्मानं अनुप्पादाय छन्दं जनेति, वायमति, विरियं आरभति, चित्तं पग्गण्हाति पदहति।

सो चक्खुना रूपं दिस्वा न निमित्तग्गाही होति, नानुब्यञ्जनग्गाही, यत्वाधिकरणमेनं चक्खुन्द्रियं असंवुतं विहरन्तं अभिज्झा दोमनस्सा पापका अकुसला धम्मा अन्वास्सवेय्युं तस्स संवराय पटिपज्जति रक्खति चक्खुन्द्रियं, चक्खुन्द्रिये संवरं आपज्जति।

सोतेन सद्दं सुत्वा घानेन गन्धं घायित्वा जिव्हाय रसं सायित्वा कायेन फोट्ठब्बं फुसित्वा मनसा धम्मं विञ्ञाय न निमित्तग्गाही होति नानुब्यञ्जनग्गाही होति यत्वाधिकरणमेनं मनिन्द्रियं असंवुतं विहरन्तं अभिज्झा दोमनस्सा पापका अकुसला धम्मा अन्वास्सवेय्युं तस्स संवराय पटिपज्जति,

---

१ अंगुत्तर निकाय ४

रक्खति मनिन्द्रिय, मनिद्रिये सवर आपज्जति। इद वुच्चति भिक्खवे सवरप्पधानं

कतमञ्च भिक्खवे पहानप्पधान ? इध भिक्खवे भिक्खु उप्पन्नान पापकान अकुसलान धम्मान पहानाय छन्द जनेति, वायमति, विरिय आरभति, चित्त पग्गण्हाति, पदहति।

सो उप्पन्न कामवितक्क—व्यापाद वितक्क—विहिंसावितक्क उप्पन्नुप्पन्ने पापके अकुसले धम्मे नाधिवासेति पजहति विनोदेति व्यन्तिकरोति अनभावङ्गमेति।

१. अधिचित्तमनुयुत्तेन भिक्खवे भिक्खुना पञ्च निमित्तानि कालेन कालं मनसिकातब्बानि। कतमानि पञ्च ?

(१) इध भिक्खवे भिक्खुनो य निमित्त आगम्म य निमित्त मनसिकरोतो उप्पज्जन्ति पापका अकुसला वितक्का 'छन्दूपसहिता पि' दोसूपसहिता पि मोहूपसहिता पि, तेन भिक्खवे भिक्खुना तम्हा निमित्ता अञ्ञ निमित्त मनसिकातब्ब कुसलूपसहित।

(२) तेस वा वितक्कान आदीनवो उपपरिक्खितब्बो—"इति पि मे वितक्का दुक्ख विपाका"

(३) तेस वा वितक्कान अमनसिकारो आपज्जितब्बो

(४) तस्स वा वितक्कानं वितक्कसङ्खारसण्ठानं मनसि कातब्बं।

(५) दन्तेहि वा दन्तमाधाय जिह्वाय तालुं आहच्च, चेतसा चित्तं अभिनिग्गण्हितब्बं अभिनिप्पीलेतब्बं अभिसन्तापेतब्बं।

तस्स तं करोतो ये पापका अकुसला वितक्का, छन्दूपसंहितापि दोसूपसंहितापि मोहूपसंहितापि, ते पहीयन्ति ते अब्भत्थं गच्छन्ति। तेसं पहाना अज्झत्तमेव चित्तं सन्तिट्ठति सन्निसीदति एकोदि होति, समाधियति। इदं वुच्चति भिक्खवे पहानप्पधानं।

कतमञ्च भिक्खवे भावनप्पधानं?

१ इध भिक्खवे भिक्खु अनुप्पन्नानं कुसलानं धम्मानं उप्पादाय छन्दं जनेति, वायमति, विरियं आरभति, चित्तं पग्गण्हाति पदहति।

सो सतिसम्बोज्झङ्गं भावेति विवेकनिस्सितं विरागनिस्सितं निरोधनिस्सितं वोस्सग्गपरिणामिं, धम्मविचयसम्बोज्झङ्गं भावेति— विरियसम्बोज्झङ्गं भावेति— पीतिसम्बोज्झङ्गं भावेति—पस्सद्धिसम्बोज्झङ्गं भावेति—समाधिसम्बोज्झङ्गं भावेति—उपेक्खासम्बोज्झङ्गं भावेति विवेकनिस्सितं विराग

निस्सित निरोधनिस्सित वोसग्गपरिणामि । इद वुच्चति भिक्खवे भावनप्पधान ।

कतमञ्च भिक्खवे अनुरक्खणप्पधान ?

इध भिक्खवे भिक्खु उप्पन्नान कुसलानं धम्मानं ठितिया असम्मोसाय भीय्योभावाय वेपुल्लाय भावनाय पारिपूरिया छन्द जनेति, वायमति, विरिय आरभति, चित्त पग्गण्हाति पदहति ।

सो उप्पन्न भद्दक समाधि निमित्त अनुरक्खति—अट्ठिक सञ्ञ पुलवक सञ्ञ विनीलक सञ्ञ विपुब्बकसञ्ञं विच्छिद्दक सञ्ञं । इद वुच्चति भिक्खवे अनुरक्खणप्पधान ।

(सो चिन्तेति)

१ कामं तचो च नहारू च अट्ठि च अवसिस्सतु, उपसुस्सतु सरीरे मंसलोहित, य त पुरिसथामेन पुरिसविरियेन पुरिस परक्कमेन पत्तब्ब, न त अपापुणित्वा विरियस्स सन्ठान भविस्सतीति ।

तस्स द्विन्न फलान अञ्ञतर फल पाटिकङ्ख दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता ।

अयं वुच्चति भिक्खवे सम्मावायामो ।

—:oo:—

१. महावग्ग

सम्मासति

कतमा च भिक्खवे सम्मासति ?

१. इध भिक्खवे भिक्खु काये कायानुपस्सी विहरति, आतापि सम्पजानो सतिमा विनेय्य लोके अभिज्झा दोमनस्सं, वेदनासु ...चित्ते ...धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति आतापि सम्पजानो सतिमा विनेय्य लोके अभिज्झा दोमनस्सं।

एकायनो अयं भिक्खवे मग्गो सत्तानं विसुद्धिया सोक परिद्दवानं समतिक्कमाय दुक्खदोमनस्सानं अत्थङ्गमाय ञायस्स अधिगमाय निब्बानस्स सच्छिकिरियाय यदिदं चत्तारो सतिप ट्ठाना।

कथं च भिक्खवे भिक्खु काये कायानुपस्सी विहरति ? इध भिक्खवे भिक्खु अरञ्ञगतो वा रुक्खमूलगतो वा सुञ्ञागारगतो वा निसीदति पल्लङ्कं आभुजित्वा उजुं कायं पणिधाय परिमुख सतिं उपट्ठपेत्वा सो सतोव अस्ससति, सतो पस्ससति। दीघं वा अस्ससन्तो दीघं अस्ससामीति पजानाति, दीघं वा पस्ससन्तो दीघं पस्ससामीति पजानाति, रस्सं वा अस्ससन्तो रस्सं अस्ससा-मीति पजानाति, रस्सं वा पस्ससन्तो रस्सं पस्ससामीति पजानाति। सब्बकाय पटिसंवेदी अस्ससिस्सामीति सिक्खति, सब्बकाय पटिसंवेदी पस्ससिस्सामीति सिक्खति।

---

१ महासतिपट्ठान सुत्त।

पस्सम्भय कायसखार अस्ससिस्सामीति सिक्खति। पस्सम्भय कायसखार पस्सससिस्सामीति सिक्खति।

अज्झत्त वा काये कायानुपस्सी विहरति। वहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति, अज्झत्त-वहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति। समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मि विहरति। वय धम्मानुपस्सी वा कायस्मि विहरति। अत्थि कायो वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सति मत्ताय अनिस्सितो च विहरति, न च किञ्चि लोके उपादियति, एवम्पि खो भिक्खवे भिक्खु काये कायानुपस्सी विहरति।

पुन च पर भिक्खवे भिक्खु गच्छन्तो वा गच्छामीति पजानाति, ठितो वा ठितोम्हीति पजानाति, निसिन्नो वा निसिन्नोम्हीति पजानाति, सयानो वा सयानोम्हीति पजानाति, यथा यथा वा पनस्स कायो पणिहितो होति तथा तथा न पजानाति।

पुन च पर भिक्खवे भिक्खु अभिक्कन्ते पटिक्कन्ते सम्पजानकारी होति, आलोकिते विलोकिते सम्पजानकारी होति, सम्मिञ्जिते पसारिते सम्पजानकारी होति, सङ्घाटीपत्तचीवर धारणे सम्पजानकारी होति, असिते पीते खायिते सायिते सम्पजानकारी होति, उच्चारपस्सावकम्मे सम्पजानकारी होति गते ठिते निसिन्ने सुत्ते जागरिते भासिते तुण्ही भावे सम्पजानकारी होति।

पुन च परं भिक्खवे भिक्खु इममेव काय उद्ध पादतला अधो केसमत्थका तचपरियन्तं पूर नानप्पकारस्स असुचिनो

पच्चवेक्खति—अत्थि इमस्मिं काये केसा लोमा नखा दन्ता तचो मसं नहारू अट्ठी अट्ठिमिञ्जा वक्कं हदयं यकनं किलोमकं पिहकं पप्फासं अन्तं अन्तगुणं उदरियं करीसं मत्थलुङ्गं पित्तं सेम्हं पुब्बो लोहितं, सेदो मेदो अस्सु वसा खेलो सिङ्घाणिका लसिका मुत्तंति।

सेय्यथापि भिक्खवे उभतो मुखा मृतोलि पूरा नाना विहितस्स धञ्ञस्स, सेय्यथीदं—सालीनं वीहीनं मुग्गानं मासानं तिलानं तण्डुलानं, तमेनं चक्खुमा पुरिसो मुञ्चित्वा पच्चवेक्खेय्य "इमे साली, इमे वीहि, इमे मुग्गा, इमे मासा, इमे तिला, इमे तण्डुला" ति—एवमेव खो भिक्खवे भिक्खु इममेव कायं उद्धं पादतला अधो केसमत्थका तचपरियन्तं पूरं नानप्पकारस्स असुचिनो पच्चवेक्खति।

पुन च परं भिक्खवे भिक्खु इममेव कायं यथाठितं यथापणिहितं धातुसो पच्चवेक्खति—"अत्थि इमस्मिं काये पठवीधातु आपोधातु तेजोधातु वायोधातु" ति

सेय्यथापि भिक्खवे दक्खो गोघातको वा गोघातकन्तेवासी वा गाविं वधित्वा चातुम्महापथे बिलसो पटिविभजित्वा निसिन्नो अस्स—एवमेव खो भिक्खवे भिक्खु इममेव कायं यथाठितं यथापणिहितं धातुसो पच्चवेक्खति।

पुन च परं भिक्खवे भिक्खु सेय्यथापि पस्सेय्य सरीरं सीवथिकाय छड्डितं एकाहमतं वा द्वीहमतं वा तीहमतं वा उद्धु-

पस्सम्भय कायसखार अस्ससिस्सामीति सिक्खति। पस्सम्भय कायसखार पस्सससिस्सामीति सिक्खति।

अज्झत्त वा काये कायानुपस्सी विहरति। बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति, अज्झत्त-बहिद्धा वा काये कायानुपस्सी विहरति। समुदयधम्मानुपस्सी वा कायस्मि विहरति। वय धम्मानुपस्सी वा कायस्मि विहरति। अत्थि कायो वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सति मत्ताय अनिस्सितो च विहरति, न च किञ्चि लोके उपादियति, एवम्पि खो भिक्खवे भिक्खु काये कायानुपस्सी विहरति।

पुन च पर भिक्खवे भिक्खु गच्छन्तो वा गच्छामीति पजानाति, ठितो वा ठितोम्हीति पजानाति, निसिन्नो वा निसिन्नोम्हीति पजानाति, सयानो वा सयानोम्हीति पजानाति, यथा यथा वा पनस्स कायो पणिहितो होति तथा तथा न पजानाति।

पुन च पर भिक्खवे भिक्खु अभिक्कन्ते पटिक्कन्ते सम्पजानकारी होति, आलोकिते विलोकिते सम्पजानकारी होति, सम्मिञ्जिते पसारिते सम्पजानकारी होति, सङ्घाटीपत्तचीवर धारणे सम्पजानकारी होति, असिने पीते खायिते सायिते सम्पजानकारी होति, उच्चारपस्सावकम्मे सम्पजानकारी होति गते ठिते निसिन्ने सुत्ते जागरिते भासिने तुण्ही भावे सम्पजानकारी होति।

पुन च पर भिक्खवे भिक्खु इममेव काय उद्ध पादतला अधो केसमत्थका तचपरियन्त पूर नानप्पकारस्स असुचिनो

पच्चवेक्खति—अत्थि इमस्मिं काये केसा लोमा नखा दन्ता तचो मंस नहारू अट्ठी अट्ठिमिञ्जा वक्कं हदय यकनं किलोमक पिहक पप्फास अन्तं अन्तगुणं उदरिय करीस मत्थलुङ्ग पित्त सेम्हं पुब्बो लोहितं, सेदो मेदो अस्सु वसा खेलो सिङ्घाणिका लसिका मुत्तति।

सेय्यथापि भिक्खवे उभतो मुखा मूतोलि पूरा नाना विहितस्स धञ्ञस्स, सेय्यथीदं—सालीन वीहीन मुग्गानं मासानं तिलानं तण्डुलान; तमेन चक्खुमा पुरिसो मुञ्चित्वा पच्चवेक्खेय्य "इमे साली, इमे वीहि, इमे मुग्गा, इमे मासा, इमे तिला, इमे तण्डुला" ति—एवमेव खो भिक्खवे भिक्खु इममेव काय उद्ध पादतला अधो केसमत्थका तचपरियन्त पूर नानप्पकारस्स असुचिनो पच्चवेक्खति।

पुन च पर भिक्खवे भिक्खु इममेव कायं यथाठित यथापणिहित धातुसो पच्चवेक्खति—"अत्थि इमस्मि काये पठवीधातु आपोधातु तेजोधातु वायो धातु" ति

सेय्यथापि भिक्खवे दक्खो गोघातको वा गोघातकन्ते वासी वा गावि वधित्वा चातुम्महापथे विलसो पटिविभजित्वा निसिन्नो अस्स—एवमेव खो भिक्खवे भिक्खु इममेव कायं यथाठित यथापणिहित धातुसो पच्चवेक्खति।

पुन च पर भिक्खवे भिक्खु सेय्यथापि पस्सेय्य सरीर सीवथिकाय छड्डितं एकाहमत वा द्वीहमत वा तीहमत वा उद्ध-

१. अरति-रति सहो होति, न च न अरति सहति, उप्पन्न अरति अभिभूय्य विहरति।

२. भय—भेरवसहो होति, न च त भय भेरव सहति, उपन्न भय-भेरव अभिभूय्य विहरति।

३. खमो होति सीतस्स उण्हस्स जिघच्छाय पिपासाय डस-मकस-वातातप-सिरिसप-सम्फस्सान दुरुत्तान दुरागतान वचनपथान उप्पन्नान सारीरिकान वेदनान दुक्खान तिब्बान खरान कटुकान असातान अमनापान पाणहरान अधिवासक जातिको होति।

४. चतुन्न झानान अभिचेतसिकान दिट्ठधम्मसुख विहारानं निकामलाभी होति अकिच्छलाभी अकसिरलाभी

५ सो अनेकविहित इद्धिविध पच्चनुभोति।

६. दिब्बाय सोनधातुया विसुद्धाय अतिक्कन्तमानुसकाय उभो सद्दे सुणाति दिब्बे च मानुसे च ये दुरे सन्तिके च।

७ परसत्तान परपुग्गलान चेतसा चेतो परिच्च पजानाति।

८. अनेकविहित पुब्बेनिवास अनुस्सरति।

९ दिब्बेन चक्खुना विसुद्धेन अतिक्कन्तमानुसकेन सत्ते पस्सति चवमाने उप्पज्जमाने हीने पणीते सुवण्णे दुब्बण्णे सुगते दुग्गते, यथाकम्मूपगे सत्ते पजानाति।

.. आसवान खया अनासव चेतो विमुत्तिं पञ्ञाविमुत्तिं
...न धम्मे सय अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरति ।

कथञ्च भिक्खवे भिक्खु वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति ।

१. इध भिक्खवे भिक्खु सुख वेदनं वेदियमानो 'सुखं वेदनं
...यामी' ति पजानाति, दुक्ख वेदन वेदियमानो दुक्खं वेदनं
...यामी ति' पजानाति, अदुक्खमसुख वेदनं वेदियमानो
अदुक्खमसुख वेदन वेदियामीति पजानाति, सामिसं वा सुखं
...न वेदियमानो 'सामिस सुख वेदन वेदियामीति'' पजानाति,
...रामिस वा सुख वेदनं वेदियमानो ''निरामिसं सुखं वेदनं
वेदियामीति पजानाति, सामिस वा दुक्खं वेदनं वेदियमानो
''सामिस दुक्खं वेदन वेदियामीति पजानाति, निरामिसं वा
दुक्खं वेदनं वेदियमानो ''निरामिसं दुक्खं वेदन वेदियामीति
पजानाति सामिस अदुक्खमसुख वेदनं वेदियमानो सामिसं
अदुक्खमसुख वेदन वेदियमीति पजानाति ।

इति अज्झत्तं वा वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति, बहिद्धा
वा वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति, अज्झत्तबहिद्धा वा
वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति. समुदयधम्मानुपस्सी वा
वेदनासु विहरति, वयधम्मानुपस्सी वा वेदनासु विहरति,
समुदयवयधम्मानुपस्सी वा वेदनासु विहरति ।

"अत्थि वेदना" ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिना होति यावदेव ञाणमत्ताय पतिस्सति मत्ताय, अनिस्सितो च विहरति, न च किञ्चि लोके उपादियति।

एवम्पि खो भिक्खवे भिक्खु वेदनासु वेदनानुपस्सी विहरति।

कथञ्च भिक्खवे भिक्खु चित्ते चित्तानुपस्सो विहरति?

इध भिक्खवे भिक्खु सराग वा चित्त 'सराग चित्तन्ति पजानाति वीतराग वा चित्त "वीतराग चित्त' न्ति पजानाति सदोस वा चित्त "सदोस चित्त' न्ति पजानाति वीतदोस वा चित्त "वीतदोसं चित्त" न्ति पजानाति समोह वा चित्त "समोहं चित्त" न्ति पजानाति वीतमोह वा चित्त "वीतमोह चित्त' न्ति पजानाति सङ्खित्त वा चित्त 'सङ्खित्त चित्त, न्ति' पजानाति विक्खित्त वा चित्त "विक्खित्त चित्त" ति पजानाति, महग्गत वा चित्त "महग्गत चित्त" न्ति पजानाति अमहग्गत वा चित्त "अमहग्गतं चित्त" न्ति पजानाति, सउत्तर वा चित्त "सउत्तर चित्त" न्ति पजानाति अनुत्तर वा चित्त "अनुत्तर चित्त" न्ति पजानाति, समाहित वा चित्त "समाहित चित्त" न्ति पजानाति असमाहित वा चित्त "असमाहित चित्त 'न्ति पजानाति, विमुत्त वा चित्त "विमुत्त चित्त" न्ति पजानाति, अविमुत्त वा चित्त "अविमुत्त चित्त" न्ति पजानाति।

इति अज्झत्त वा चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति, बहिद्धा वा चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति, अज्झत्तबहिद्धा वा चित्ते

स्सी विहरति। समुदयवधम्मानुपस्सी वा चित्तस्मिं विहरति, वयधम्मानुपस्सी वा चित्तस्मिं विहरति, समुदय वय धम्मानुपस्सी वा चित्तस्मिं विहरति। "अत्थि चित्त" न्ति वा पनस्स सति पच्चुपट्ठिता होति, यावदेव ञाणमत्ताय पटिस्सतिमत्ताय अनिस्सितो च विहरति न च किञ्चि लोके उपादियति। एवम्पि खो भिक्खवे भिक्खु चित्ते चित्तानुपस्सी विहरति।

कथञ्च भिक्खवे भिक्खु धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति?

इध भिक्खवे भिक्खु धम्मेसु धम्मानुपस्सी विहरति पञ्चसु नीवरणेसु।

इध भिक्खवे भिक्खु सन्तं वा अज्झत्तं कामच्छन्दं "अत्थि अज्झत्तं कामच्छन्दो" ति पजानाति, असन्तं वा अज्झत्तं कामच्छन्दं "नत्थि मे अज्झत्तं कामच्छन्दो" ति पजानाति, यथा च अनुप्पन्नस्स कामच्छन्दस्स उप्पादो होति, तं च पजानाति, यथा च उप्पन्नस्स कामच्छन्दस्स पहानं होति, तं च पजानाति, यथा च पहीनस्स आयतिं अनुप्पादो होति तं च पजानाति।

सन्तं वा अज्झत्तं व्यापादं "अत्थि मे अज्झत्तं व्यापादो" ति पजानाति असन्तं वा अज्झत्तं व्यापादं "नत्थि मे अज्झत्तं व्यापादो" ति पजानाति। यथा अनुप्पन्नस्स व्यापादस्स उप्पादो होति तं च पजानाति, यथा च उप्पन्नस्स व्यापादस्स पहान

सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना, पुब्बेव सोमनस्स दोमनस्सान अत्थगमा, अदुक्ख असुख उपेक्खासतिपारिसुद्धि चतुत्थज्झानं उपसम्पज्ज विहरति।

१ इध भिक्खवे भिक्खु पठम दुतिय ततिय चतुत्थ झान उपसम्पज्ज विहरति। सो यदेव तत्थ होति रूप-गत, वेदना गत, सञ्ञा गत, सखार-गत विञ्ञान-गत—ते धम्मे अनिच्चतो, दुक्खतो, रोगतो, गण्डतो, सल्लतो, अघतो, आबाधतो, परतो, पलोकतो, सुञ्ञतो, अनत्ततो समनुपस्सति। सो तेहि धम्मेहि चित्त पटिवारेति। सो तेहि धम्मेहि चित्त पटिवारेत्वा अमताय धातुया चित्त उपसहरति—"एत सन्त, एत पणीत यदिद सब्बसङ्खारसमथो सब्बूपधिपटिनिस्सग्गो तण्हक्खयो विरागो निरोधो निब्बाण 'ति। सो तत्थट्ठितो आसवान खय पापुणाति।

नो चे आसवान खयं पापुणाति, तेनेव धम्मरागेन ताय धम्मनन्दिया पञ्चन्न ओरम्भागियान सयोजनान परिक्खया ओपपातिको होति तत्थ परिनिब्बायी अनावत्तिधम्मो तस्मा'लोकाति।

इध भिक्खवे भिक्खु मेत्तासहगतेन चेतसा एक दिस फरित्वा विहरति, तथा दुतिय, तथा ततिय, तथा चतुत्थ, इति उद्धमधो तिरिय सब्बधि सब्बत्थताय सब्बावन्त लोक मेत्तासहगतेन चेतसा विपुलेन महग्गतेन अप्पमाणेन अवेरेन अब्यापज्झेन फरित्वा विहरति। करुणा सहगतेन चेतसा विहरति।

१. अगुत्तर निकाय ९।

उपेक्खा सहगतेन चेतसा विहरति ··· सब्बसो रूपसञ्ञानं
समतिक्कमा पटिघसञ्ञानं अत्थगमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा-
"अनन्तो आकासो" ति आकासानञ्चायतनं उपसम्पज्ज विह-
रति । आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म—"अनन्तं विञ्ञाणं" ति
विञ्ञाणञ्चायतनं उपसम्पज्ज विहरति। विञ्ञाणञ्चायतनं समति-
क्कम्म 'नत्थि किञ्चि' ति आकिञ्चञ्ञायतनं उपसम्पज्ज विहरति ।
सो यदेव तत्थ होति वेदनागतं सञ्ञागतं सङ्खारगतं विञ्ञाणगतं-
ते धम्मे अनिच्चतो, दुक्खतो, रोगतो, गण्डतो, सल्लतो, अघतो,
आबाधतो, परतो, पलोकतो सुञ्ञतो, अनत्ततो, समनुपस्सति ;
सो तेहि धम्मेहि चित्तं पटिवापेति । सो तेहि धम्मेहि चित्तं पटि
वापेत्वा अमताय धातुया चित्तं उपसंहरति—"एतं सन्तं एतं
पणीतं यदिदं सब्बसङ्खारसमथो, सब्बूपधिपटिनिस्सग्गो
तण्हक्खयो विरागो निरोधो निब्बानं' ति । सो तत्थट्ठितो आसव-
खानं खयं पापुणाति ॥

नो चे आसवानं खयं पापुणाति तेनेव धम्मरागेन ताय
धम्मनन्दिया पञ्चन्नं ओरम्भागियानं संयोजनानं परिक्खया
ओपपातिको होति, तत्थ परिनिब्बायी, अनावत्तिधम्मो तस्मा
दानि ॥

सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्म नेवसञ्ञानासञ्ञा-
यतनं उपसम्पज्ज विहरति । सब्बसो नेवसञ्ञानासञ्ञायतनं
समतिक्कम्म सञ्ञावेदयितनिरोधं उपसम्पज्ज विहरति ।

अनभिसङ्खरोन्तो भिक्खवे अनभिसञ्चेतयन्तो भवाय वा विभवाय वा न किञ्चि लोके उपादियति। अनुपादियन्तो न परितस्सति अपरितस्स पच्चत्तं येव परिनिब्बाति—"खीणा जाति वुसित ब्रह्मचरियं कत करणीय नापर इत्थत्तायाति पजानाति।

सो सुख च वेदन वेदेति, दुक्ख च वेदन वेदेति, अदुक्खमसुख च वेदनं वेदेति—"सा अनिच्चा ति पजानाति, "अनज्झोसिता' ति पजानाति। 'अनभिनन्दिता" ति पजानाति, विसञ्ञुत्तो त वेदेति, "कायस्स भेदा परम्मरणा उद्ध जीवित परियोदाना इधेव सब्ब वेदयितानि अनभिनन्दितानि सीति भविस्सन्ती" ति पजानाति।

सेय्यथापि भिक्खवे तेल च पटिच्च वट्टि च पटिच्च तेलपदीपो झायति, तस्सेव तेलस्स च वट्टिया परियादाना अञ्ञस्स च अनुपादाना अनाहारो निब्बायति—एवमेव खो भिक्खवे कायस्स भेदा परम्मरणा उद्ध जीवित परियोदाना इधेव सब्ब वेदयितानि अनभिनन्दितानि सीति भविस्सन्ति।

१. एसा हि भिक्खवे परमा अरिया पञ्ञा, यदिद सब्बदुक्खखये ञाण। तस्स सा विमुत्ति सच्चे ठिता अकुप्पा होति।

एत हि भिक्खवे परम अरियसच्च, यदिद असम्मोस धम्म निब्बान।

---

१. मज्झिम निकाय, धातु विभ सुत्त।

अनभिसङ्खरोन्तो भिक्खवे अनभिसञ्चेतयन्तो भवाय वा विभवाय वा न किञ्चि लोके उपादियति। अनुपादियन्तो न परितस्सति अपरितस्स पच्चत्तं येव परिनिब्बाति—"खीणा जाति वुसितं ब्रह्मचरियं कतं करणीयं नापरं इत्थत्तायाति पजानाति।

सो सुखं चे वेदनं वेदेति, दुक्खं चे वेदनं वेदेति, अदुक्खम-सुखं चे वेदनं वेदेति—"सा अनिच्चा' ति पजानाति, "अनज्झो-सिता' ति पजानाति। 'अनभिनन्दिता" ति पजानाति, विसञ्ञुत्तो तं वेदेति, "कायस्स भेदा परम्मरणा उद्धं जीवित परियोदाना इधेव सब्ब वेदयितानि अनभिनन्दितानि सीती भविस्सन्ती' ति पजानाति।

सेय्यथापि भिक्खवे तेलं च पटिच्च वट्टिं च पटिच्च तेलपदीपो झायति, तस्सेव तेलस्स च वट्टिया परियादाना अञ्ञस्स च अनुपादाना अनाहारो निब्बायति—एवमेव खो भिक्खवे कायस्स भेदा परम्मरणा उद्धं जीवित परियोदाना इधेव सब्ब वेदयितानि अनभिनन्दितानि सीतिभविस्सन्ति।

१. एसा हि भिक्खवे परमा अरिया पञ्ञा, यदिदं सब्बदुक्ख-खये ञाणं। तस्स सा विमुत्ति सच्चे ठिता अकुप्पा होति।

एतं हि भिक्खवे परमं अरियसच्चं, यदिदं असम्मोस धम्मं निब्बानं।

---

१. मज्झिम निकाय, धातु विभङ्ग सुत्त।

वूपसन्तचित्तो, उद्धच्चकुक्कुच्चा चित्तं परिसोधेति। विचिकिच्छं पहाय तिण्णविचिकिच्छो विहरति अकथंकथी कुसलेसु धम्मेसु, विचिकिच्छाय चित्तं परिसोधेति।

सो इमे पञ्च नीवरणे पहाय, चेतसो उपक्किलेसे पञ्ञाय दुब्बलीकरणे विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमज्झानं उपसम्पज्ज विहरति।

१ पठमं खो भिक्खवे झानं पञ्चङ्गविप्पहीनं, पञ्चङ्गसमन्नागतं। इध भिक्खवे पठमं झानं समापन्नस्स भिक्खुनो १. कामच्छन्दो पहीनो होति २. ब्यापादो पहीनो होति ३. थीनमिद्धं पहीनं होति, उद्धच्च कुक्कुच्चं पहीनं होति, विचिकिच्छा पहीना होति वितक्को च वत्तति विचारो च पीति च सुखं च चित्तेकग्गता चाति।

२. पुन च परं भिक्खवे भिक्खु वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियज्झानं उपसम्पज्ज विहरति।

पीतिया च विरागा उपेक्खको च विहरति, सतो च सम्पजानो, सुखं च कायेन पटिसंवेदेति, यं तं अरिया आचिक्खन्ति— 'उपेक्खको सतिमा सुखविहारी'ति ततियज्झानं उपसम्पज्ज विहरति।

---

१. मज्झिम निकाय, मूल धम्मसमाधान सु।

२. मज्झिम निकाय मूल हत्थिपदोपम सुत्त।

सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना, पुब्बेव सोमनस्स दोमनस्सान अत्थगमा, अदुक्ख असुख उपेक्खासतिपारिसुद्धि चतुत्थज्झान उपसम्पज्ज विहरति।

१ इध भिक्खवे भिक्खु पठम   दुतिय ' ततिय   चतुत्थ झानं उपसम्पज्ज विहरति। सो यदेव तत्थ होति रूप-गत, वेदना गत, सञ्ञा गत, सखार-गत विञ्ञान-गत—ने धम्मे अनि च्चतो, दुक्खतो, रोगतो, गण्डतो, सल्लतो, अघतो, आबाधतो, परतो, पलोकतो, सुञ्ञतो, अनत्ततो समनुपस्सति। सो तेहि धम्मेहि चित्त पटिवारेति। सो तेहि धम्मेहि चित्त पटिवारेत्वा अमताय धातुया चित्त उपसहरति—"एत सन्त, एत पणीत यदिद सब्बसङ्खारसमथो सब्बूपधिपटिनिस्सग्गो तण्हक्खयो विरागो निरोधो निब्बाण 'ति। सो तत्थट्ठितो आसवान खय पापुणाति।

नो चे आसवान खय पापुणाति, तेनेव धम्मरागेन ताय धम्मनन्दिया पञ्चन्न ओरम्भागियान सयोजनान परिक्खया ओप पातिको होति तत्थ परिनिब्बायी अनावत्तिधम्मो तस्मा'लोकाति।

इध भिक्खवे भिक्खु मेत्तासहगतेन चेतसा एक दिस फरित्वा विहरति, तथा दुतिय, तथा ततिय, तथा चतुत्थ, इति उद्धमधो तिरिय सब्बधि सब्बत्थताय सब्बावन्त लोक मेत्तासहगतेन चेतसा विपुलेन महग्गतेन अप्पमाणेन अवेरेन अब्यापज्झेन फरित्वा विहरति। करुणा सहगतेन चेतसा   विहरति।

---

१. अगुत्तर निकाय ६।

अनभिसङ्खरोन्तो भिक्खवे अनभिसञ्चेतयन्तो भवाय वा विभवाय वा न किञ्चि लोके उपादियति। अनुपादियन्तो न परितस्सति, अपरितस्स पच्चत्तं येव परिनिब्बाति—"खीणा जाति वुसित ब्रह्मचरिय कत करणीय नापर इत्थत्तायाति पजानाति।

सो सुख च वेदना वेदेति, दुक्ख च वेदना वेदेति, अदुक्खम सुख च वेदनं वेदेति—"सा अनिच्चा ति पजानाति "अनज्झो सिता' ति पजानाति। 'अनभिनन्दिता" ति पजानाति विसञ्ञुत्तो त वेदेति, 'कायस्स भेदा परम्मरणा उद्ध जीवि परियोदाना इधेव सब्ब वेदयितानि अनभिनन्दितानि सीि भविस्सन्ती' ति पजानाति।

सेय्यथापि भिक्खवे तेल्ल च पटिच्च वट्टिं च पटिच्च तेलपदी झायति, तस्सेव तेलस्स च वट्टिया परियादाना अञ्ञस्स अनुपादाना अनाहारो निब्बायति—एवमेव खो भिक्खवे कायस भेदा परम्मरणा उद्ध जीवित परियोदाना इधेव सब्ब वेदयिता अनभिनन्दितानि सी त भविस्सन्ति।

१. एसा हि भिक्खवे परमा अरिया पञ्ञा, यदिद सब्बदुक्ख खये ञान। तस्स सा विमुत्ति सच्चे ठिता अकुप्पा होति।

एत हि भिक्खवे परम अरियसच्च, यदिद असम्मोस धम्म निब्बान।

---

१. मज्झिम निकाय, धातु विभ सुत्त।

एसो हि भिक्खवे अरियो चागो, यदिदं सब्बूपधिपटिनिस्सग्गो।

एसो हि भिक्खवे परमो अरियो उपसमो, यदिदं राग-दोस-मोहानं उपसमो।

"अस्मी" ति भिक्खवे मञ्ञितमेतं, "अयमहमस्मी" ति मञ्ञितमेतं "भविस्सं" न्ति मञ्ञितमेतं, "न भविस्सं" न्ति मञ्ञितमेतं, "अरूपी भविस्सं" न्ति मञ्ञितमेतं, "सञ्ञी भविस्सं" न्ति मञ्ञितमेतं, "असञ्ञी भविस्सं" न्ति मञ्ञितमेतं, मञ्ञितं भिक्खवे रोगो, मञ्ञितं गण्डो, मञ्ञितं सल्लं। सब्ब मञ्ञितानं त्वेव समतिक्कमा "मुनि सन्तो" ति वुच्चति।

मुनि खो पन भिक्खवे सन्तो न जायति, न जीयति न मीयति, न कुप्पति, नप्पिहेति, तञ्हिस्स भिक्खवे नत्थि, येन जायेथ। अजायमानो किं जीयिस्सति ? अजीयमानो किं कुप्पिस्सति ? अकुप्पियमानो किं पिहेस्सति ?

१. इति खो भिक्खवे नयिदं ब्रह्मचरियं लाभ-सक्कार सिलोकानिसंसं न सील सम्पदानिसंसं, न समाधि सम्पदानिसंसं, न ञाण-दस्सनानिसंसं, या च खो अयं भिक्खवे अकुप्पा चेतोविमुत्ति, एतदत्थमिदं भिक्खवे ब्रह्मचरियं एतं सारं एतं परियोसानं' ति।

२. ये पि ते भिक्खवे अहेसुं अतीतमद्धानं अरहन्तो सम्मा सम्बुद्धा ते पि भगवन्तो एतपरमं येव सम्मा भिक्खुसङ्घं पटिपा

१ मज्झिम निकाय महासारोपम सुत्त।
२ मज्झिम निकाय कन्दरक सुत्त।

देयु, सेय्यथापि एतरहि मया सम्मा भिक्खुसङ्घो पटिपादितो। ये पि ते भिक्खवे भविस्सन्ति अरहन्तो सम्मा सम्बुद्धा, ते पि भगवन्तो एतपरम येव सम्मा भिक्खुसघ पटिपादेस्सन्ति, सेय्यथापि एतरहि मया सम्मा भिक्खुसघो पटिपादितो।

१. य खो भिक्खवे सत्थारा करणीय सावकान हितेसिना अनुकम्पकेन अनुकम्प उपादाय, कत वो त मया। एतानि भिक्खवे रुक्खमूलानि, एतानि सुञ्ञागारानि। झायथ भिक्खवे मा पमादत्थ (मा पच्छाविप्पटिसारिनो अहुवत्थ) अय अम्हाक, अनुसासनीति ॥

१अगुत्तर निकाय ७.